RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20/प्रकाशन तिथि 29 अक्टूबर 2018

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका नवम्बर 2018

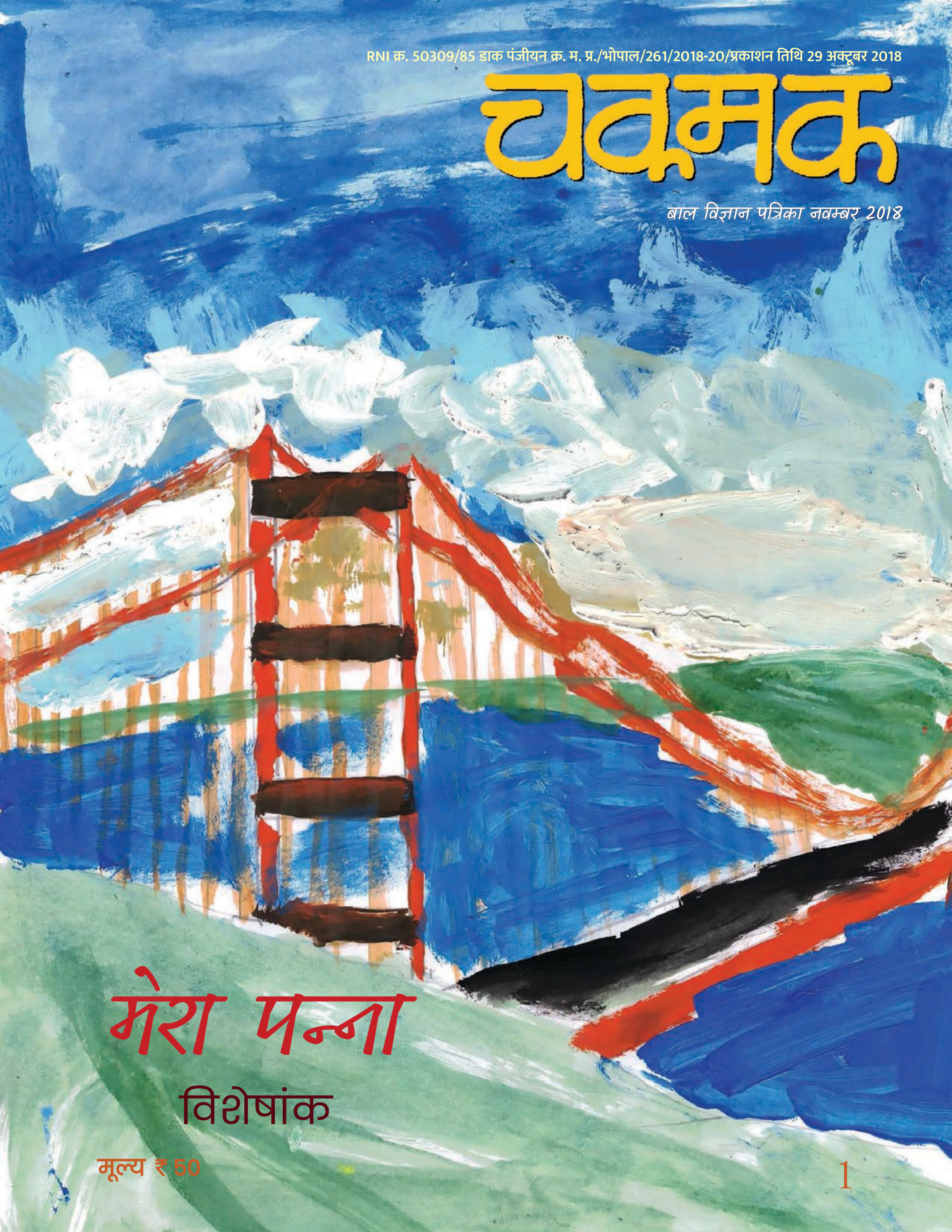

मेरा पन्ना

विशेषांक

मूल्य ₹ 50

कक्षा 2 और 3 के बच्चे, शहीद स्कूल
रायपुर, छत्तीसगढ़

अंक 386 नवम्बर 2018

चकमक

मेरा पन्ना विशेषांक

चित्र: अभ्यांश भटनागर, के जी 1, सागर पब्लिक स्कूल, भोपाल,मध्य प्रदेश

आवरण चित्र: आदित्य चन्द्र, चौथी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, पटना, बिहार

मेरा पन्ना विशेषांक में सम्पादकीय सहयोग

अनन्त शर्मा, अनीसा धीमान, आनन्द कु. पाण्डे, इकरा सिद्दीकी, खुशी खान, फिज़ा खान, बीहू आनन्द, दिव्या पवार, मानस प. शर्मा, रुक्सार खान, सानिया जाटव

इस बार

मैं और मेरे दोस्त 2
ड्रेड लॉक - मानसी 4
3750 साल पुराना घर - सी. एन. सुब्रह्मण्यम् 7
बातूनी - वीरेन्द्र दुबे 9
इल्ली-उल्ला हल्ला-गुल्ला - डॉ जयजयराम आनन्द 10
करामात - निकोलाई रादलोव 12
तुम भी जानो 13
मालवा माटी और नगर इन्दौर - दिलीप चिंचालकर 14
दौड़ पड़ी - लोकेश मालती प्रकाश 17
आज़ादी - कुलदीप शर्मा 18
घोड़े फुर्र-फुर्र क्यों करते हैं - अरविन्द गुप्ते 19
भूलभुलैया 20
ऊबड़-खाबड़ नाम - प्रभात 21
कैसे बना यह विशेषांक 22
कहानी पूरी करो - आनन्द कु. पाण्डे और बीहू आनन्द 24
क्यों - शिवानी यादव 25
चाँद - माया 26
गणित है मज़ेदार - प्रतिका गुप्ता 28
चुनमुन और हिप्पो - ख्वाहिश 30
चॉकलेट बना पैसा 31
तुम भी बनाओ 32
गिलहरी - मुकुल वावल 35
चाँद का तोहफा - रोहित 36
मैं रोज़ सोचती हूँ - तान्या नेताम 36
मैं आम हूँ - दीपा 37
पेड़ - नेहा राय 37
एक बन्दर - रामभरोस गोलिया 39
माथापच्ची 40
छतरी - निकोलाई रादलोव 41
चित्रपहेली 43
मेरा गाना - रोशन कुमार साहू 44

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

डिज़ाइन
कनक शशि

सम्पादकीय सहयोग
कविता तिवारी
सजिता नायर
गुल सारिका झा

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

वितरण
झनक राम साहू

सहयोग
कमलेश यादव

एक प्रति : ₹ 50
वार्षिक : ₹ 500
तीन साल : ₹ 1350
आजीवन : ₹ 6000
सभी डाक खर्च हम देंगे

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं। एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य

ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म. प्र. 462 016, फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017
email - chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in; www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

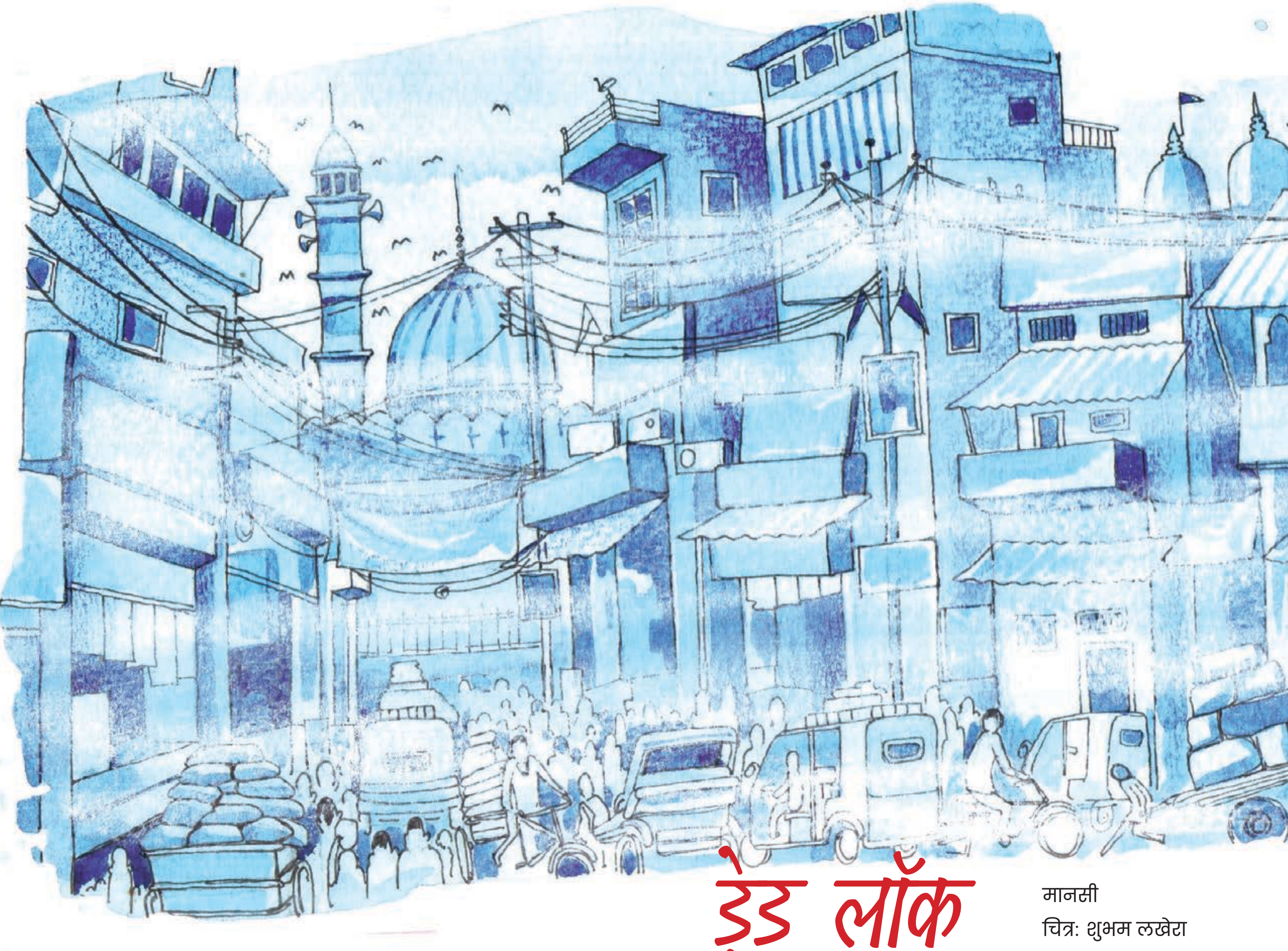

ड्रेड लॉक

मानसी
चित्र: शुभम लखेरा

जनवरी की कड़कड़ाती ठण्ड और सुबह-सुबह सब कुछ धुन्धला कर देने वाला कोहरा, फिर भी चाँदनी चौक की तंग गलियों में सन्नाटा नहीं था। रेशमा आपा के मुर्गे ने बांग भी नहीं दी थी। किसी के घर में कुकर की सीटी बज रही थी, कहीं से मोटर चलने की आवाज़ आ रही थी।

खिलखिलाते चेहरे और लम्बी-चौड़ी देह वाला नाई महीनों पहले सहारनपुर से आया था। उसकी पत्नी और बेटी भी उसके साथ ही आई थीं। चन्दू ने अपनी दुकान की दीवार के सहारे लकड़ी की एक ऊँची-सी मेज़ खड़ी कर दी थी और उसके सामने एक कुर्सी रखी थी। उस पर उसने लाल व नीली धारियों वाला नया तौलिया बिछाया था। मेज़ पर दो-चार तरह की कंघी, पाउडर की गुलाबी रंग की डिबिया, उस्तरा और लोहे की पतली-सी कैंची रखी थी।

दुकान पर ग्राहकों से ज़्यादा मनचले पहलवान और सरकारी अफसर चक्कर लगाते और हफ्ते की रकम वसूल करते थे। चन्दू के चेहरे की रंगत उड़ गई थी। आँखों में पीलापन छा चुका था और कपड़े शरीर पर झूलने लगे थे। रोज़ की आमदनी तीस-चालीस रुपए से आगे नहीं बढ़ पा रही थी।

एक शाम जब वह घर पहुँचा तो बेटी ने दरवाज़ा खोला। बेटी का खिलखिलाता चेहरा देखकर उसने पूछा, “क्या बात है! आज गुड़िया रानी इतनी खुश क्यों है?” पाँच वर्ष की गुड़िया ने चेहरे पर गिरे घुंघराले बालों को कान के पीछे पहुँचाया और अपनी छोटी-छोटी आँखों को फैलाकर बोली, “पापा! मम्मी ने आज स्कूल में मेरा दाखिला करवा दिया!” चन्दू खुश हो गया।

चन्दू की पत्नी अनीता रोटी सेंक रही थी। वह भी बहुत दुबली हो चुकी थी। कलाई पर उभरी नसें साफ नज़र आ रही थीं। उसका चेहरा बदल गया था, गाल अन्दर जा चुके थे और आँखों के नीचे गड्ढे बन गए थे।

अगले दिन कोई ग्राहक न आया तब चन्दू अपना सिर पकड़कर फुटपाथ पर ही बैठ गया। तभी उसे ज़मीन पर किसी की परछाई दिखाई दी। जब उसने सिर उठाकर देखा तो सामने एक साधु को पाया। साधु देखने में तो दुबला था, लेकिन उसके चेहरे पर तेज़ था। वह नारंगी वस्त्र धारण किए हुए था और वह अनमोल रत्नों और रुद्राक्ष की मालाओं से लदा हुआ था। साधु को देखकर चन्दू फटाफट खड़ा हुआ और अपनी कैंची उठाते हुए बोला, "आइए जनाब, ऐसी हजामत करूँगा कि चेहरा चमक उठेगा आपका!" यह सुनकर साधु का मुँह लाल हो गया और वह चिल्लाया, "हे मूर्ख! तुझे इतना भी नहीं पता कि हमारे प्रोफेशन में बाल नहीं कटवाते।" चन्दू का सारा उत्साह खत्म हो गया।

साधु ने फिर होंठ सिकोड़कर पूछा, "ड्रेड लॉक का नाम सुना है?"

"क्या डेड? राम-राम... स्वामी जी यह कैसी मरने-गिरने की बात कर रहे हैं?" चन्दू हैरानी के साथ बोल पड़ा। "अरे नहीं-नहीं, ड्रेड लॉक," साधु ने उच्चारण को स्पष्ट करने की कोशिश की। उसने चन्दू के कन्धे पर हाथ रखा और बोला, "यह दिल्ली है बालक, यहाँ हर तरफ ग्लैमर का जादू फैला हुआ है! अपने हुनर में थोड़ा मसाला मिला और फिर देख।" साधु की बातें सुनकर चन्दू बच्चे की तरह फूट-फूटकर रोने लगा। साधु अपने झोले में कुछ टटोलने लगा और उसने झोले से एक पतली-सी डायरी निकाली और चन्दू को थमा दी।

साधु मुस्कराते हुए बताने लगा, "यह मेरे गुरू की डायरी है, वह भी तुम्हारी तरह एक नाई थे। लोगों के उधार से बचने के लिए बैरागी बन गए थे। यह उन्हीं के लिखे 50 नुस्खे हैं।" चन्दू बहुत खुश हुआ। साधु ने उसे रोज़ एक नुस्खा पढ़ने की सलाह दी और कहा कि पचास दिन बाद वह एक बढ़िया नाई बन जाएगा। जय भोले कहते हुए साधु ने विदा ले ली।

अगले दिन से चन्दू ने ठीक वैसा ही किया जैसा उसे साधु ने समझाया था। एक लड़का उसकी दुकान पर आया और बोला, "अंकल, सलमान की फिल्म देखी है? तेरे नाम वाली कटिंग चाहिए, हो जाएगी? "हाँ-हाँ ज़रूर, बैठो अभी कर देता हूँ," चन्दू ने अपनी कैंची बजाते हुए जवाब दिया। उसने बाल काटने शुरू किए, चन्दू को कुछ खास फर्क महसूस नहीं हुआ लेकिन जैसे ही उसने लड़के को आईना दिखाया तो उस लड़के का चेहरा बिलकुल सलमान खान के चेहरे जैसा हो गया। लड़के की आँखें फटी रह गईं और चन्दू के हाथ काँपने लगे। सलमान खान जैसी सूरत पाकर लड़का खुशी से पागल हो गया और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता हुआ भाग गया। शाम तक यह बात मुहल्ले में फैल गई और चन्दू की दुकान पर लोगों की भीड़ जमा होने लगी। चन्दू के पास अब पानी पीने की फुर्सत भी नहीं रही।

लोग चन्दू को अब मुँहमाँगी कीमत देने लगे। अब उसने एक शानदार सैलून खोल लिया था। वह कामयाबी की सीढ़ी पर चढ़ता जा रहा था।

सुबह से शाम तक उसके सैलून पर लोगों की भीड़ लगी रहती। कोई शाहरुख खान बनकर निकलता तो कोई आमिर खान। नूरानी चेहरे पाकर नौजवानों की रुचि अब स्कूल और कॉलेजों में नहीं रही। अब तो सबका रुझान डाँस और एक्टिंग की ओर बढ़ गया था। अन्तत: रोज़ ही मुहल्ले के नौजवान अपना हुनर आज़माने बसों में भरकर मुम्बई जाने लगे। चाँदनी चौक के सितारे मुम्बई सिनेमा में छा गए। मशहूर फिल्मी हस्तियों के महँगे दामों और नखरों से परेशान निर्देशकों ने दिल्ली से आए हमशक्लों के साथ फिल्में बनानी शुरू कर दीं।

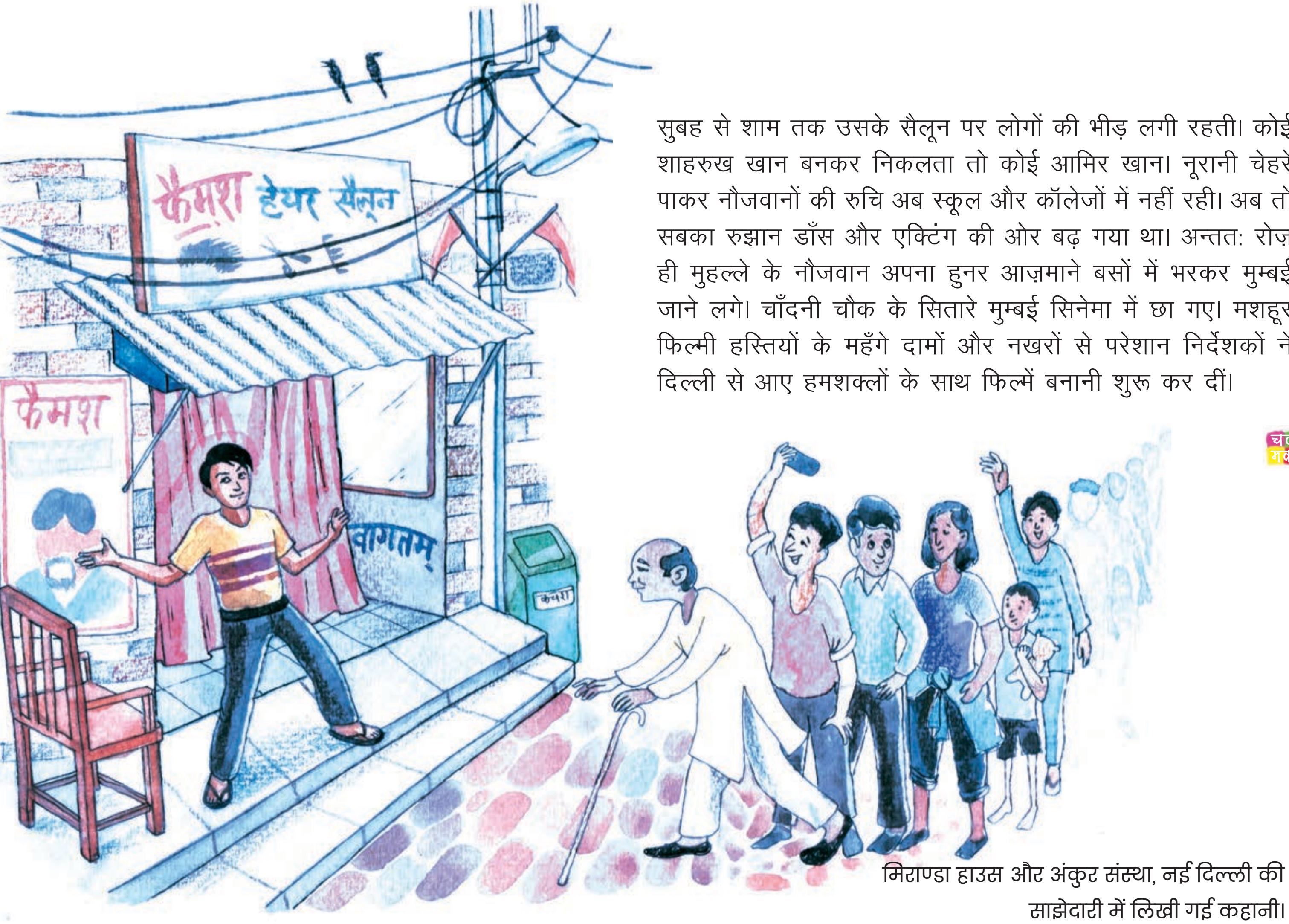

मिराण्डा हाउस और अंकुर संस्था, नई दिल्ली की साझेदारी में लिखी गई कहानी।

चुटकुले

चित्र: रिया पटेल

एक पुराने स्कूल को कैसे पहचानें

3750 साल पुराना घर – जो स्कूल भी था

सी एन सुब्रह्मण्यम्

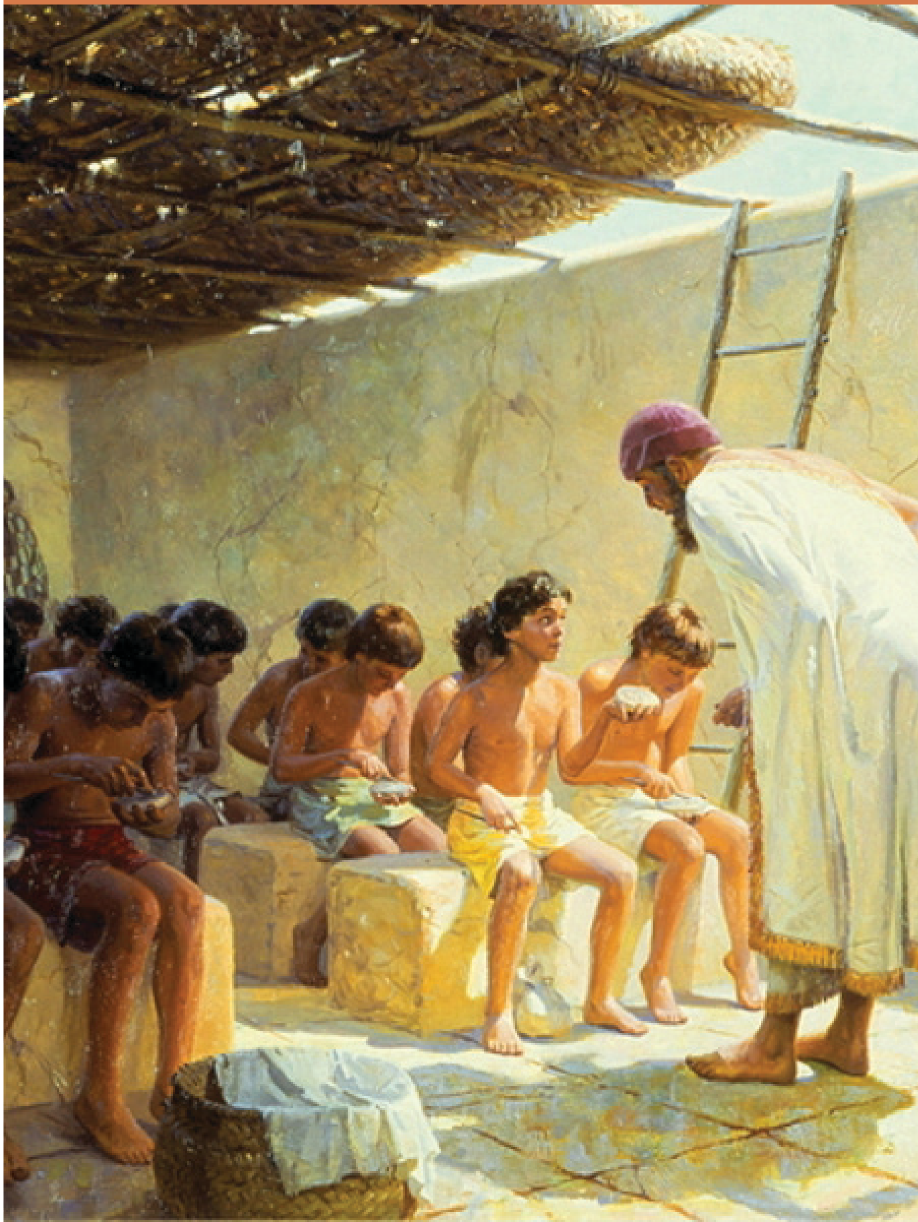

मान लो हम आज से चार हज़ार साल बाद अपने शहर पहुँचते हैं। शहर खण्डहर हो चुका है। सब कुछ मिट्टी में दबा हुआ है। मिट्टी को हटाने पर बहुत सारे घर और इमारत दिखते हैं। अगर उनमें से किसी स्कूल को पहचानना है तो कैसे पहचानेंगे? किसी होटल, अस्पताल, सरकारी दफ्तर और स्कूल - इनमें क्या कोई फर्क होगा? याद रहे कि हमारे उपयोग की ज़्यादातर चीज़ें सड़-गल गई होंगी, जैसे किताब-कॉपी, रजिस्टर, वगैरह। बैठने की टाटपट्टी या बेंच भी शायद नहीं बची रहेंगी। न ही स्कूल के नाम का बोर्ड। तो कोई इमारत स्कूल है कि दफ्तर कैसे पहचानेंगे?

इराक देश में आज से लगभग 3750 साल पहले बसे एक शहर की खोज हुई। शहर का नाम था निप्पुर। इराक के उस पुराने शहर में लाखों चिकनी मिट्टी के पटिये मिले हैं। इन पर कई बातें लिखी हुई हैं - हिसाब-किताब, किस्से-कहानियाँ, पुराण, देवी--देवताओं की स्तुति, लोगों के बीच आपसी समझौते वगैरह-वगैरह। उन दिनों वे लोग गीली मिट्टी के पटिये बनाते थे और उस पर कील से लिखकर पटियों को सुखा लेते थे। मिट्टी के ये पटिये व कील उनके लिए कागज़-कलम का काम करते थे। कई पटियों से उस ज़माने के स्कूलों के बारे में पता चलता है। आखिर लेखा-जोखा रखने वालों को कई बातें सीखनी होती हैं।

यह तो हमें पता है कि उन शहरों में स्कूल थे। मगर कौन-सा खण्डहर स्कूल का है, यह कैसे पता करें? किसी ने सोचा, स्कूल में ज़रूर खूब सारे मिट्टी के पटिये मिलेंगे जिन पर कुछ न कुछ लिखा होगा। मगर, यह कोई सरकारी दफ्तर, या पुस्तकालय भी तो हो सकता है। तो निप्पुर शहर को खोदने वाले सोच रहे थे कि उस समय के स्कूल कैसे रहे होंगे और उसे आज हम कैसे पहचानें?

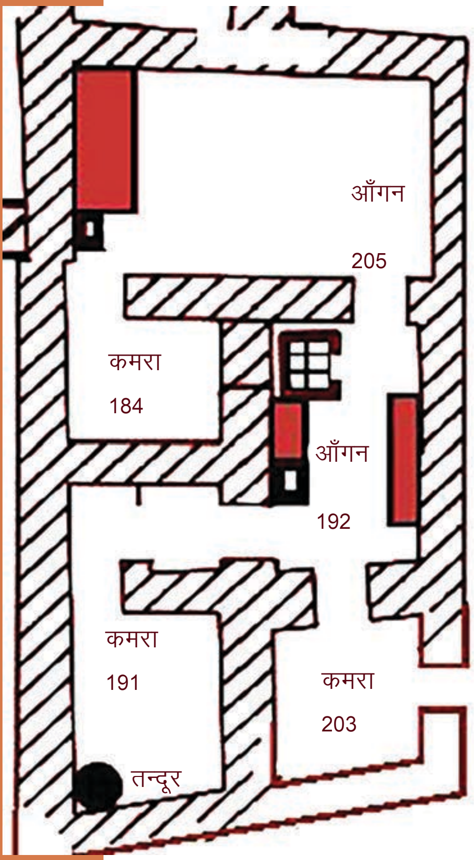

चित्र-1: मकान-एफ का नक्शा

चित्र-2: नकल की पटिया जिसमें एक तरफ शिक्षक ने सफाई से लिखा है और दूसरी तरफ छात्र ने उसकी नकल करने का प्रयास किया है।

खोदते-खोदते उन्हें एक इमारत मिली। इमारत बहुत बड़ी नहीं थी, एक छोटे-से घर जितनी थी। इसमें खूब सारे मिट्टी के पटिये मिले। इस घर को 'मकान-एफ' नाम दिया गया। मकान के नक्शा (चित्र-1) को देखने पर पता चलता है कि उसमें तीन कमरे थे। खोदने वालों ने उन्हें नम्बर 203, 191, 184 दिया। दो आँगन थे, जिन्हें संख्या दी गई 192 और 205। घर में घुसने के लिए कमरा नम्बर 203 में एक दरवाज़ा बना था। दोनों आँगनों में बैठने के लिए ईंट और मिट्टी की लम्बी बेंच बनी थीं। कमरा नम्बर 191 के एक कोने में तन्दूर था जिसमें शायद खाना पकाया जाता था। इससे यह तो लगा कि यह किसी का घर था। मगर यह घर बाकी घरों से कुछ अलग था।

मकान-एफ की खासियत यह थी कि यहाँ से खूब सारे (1400 से अधिक) मिट्टी के पटिये मिले जबकि आसपास के घरों से इक्के-दुक्के ही मिले। इसका साफ मतलब था कि यहाँ कुछ पढ़ने-लिखने का काम हो रहा था। इस घर पर यह भी देखा गया कि फर्श पर और दीवारों पर टाइल की तरह भी मिट्टी के पटिये प्रयोग किए गए थे। यानी यहाँ इतने पटिये बरबाद हो रहे थे कि उनका घर बनाने की सामग्री की तरह इस्तेमाल होने लगा था। दोनों आँगनों में मिट्टी के बड़े बक्से मिले जिनमें ढेर सारे टूटे पटिये मिले, मानो उपयोग के बाद पटियों को उनमें डाल दिया गया हो। वहाँ से ऐसे भी बक्से मिले जिनमें इन पटियों को गलाकर रखा गया था। शायद पुराने पटियों को नए कोरे पटियों में बदला जाता था। आँगन में एक जगह हौज जैसी बनी थी, जिसमें पानी भरकर रखा जा सकता था और पास में गीली मिट्टी के ढेर भी थे।

इससे कुल मिलाकर यह तो समझ में आया, कि इस जगह मिट्टी के पटियों पर खूब लिखने का काम हो रहा था और कई लिखे हुए पटियों को गलाकर फिर से कोरे पटिये तैयार किए जा रहे थे। यानी जो लिखा जा रहा था, वह सम्भालकर रखने लायक नहीं था। तो यह कैसी जगह थी जहाँ लोग बहुत मेहनत से लिखे जा रहे थे, मिटाते जा रहे थे, फर्श या दीवार पर छापे जा रहे थे?

जब लोगों ने इन पटियों को पढ़कर देखा तो पता चला कि लगभग आधे पटियों पर साहित्य और आधे पटियों पर पढ़ाने की सामग्री थी।

पढ़ाने वाली सामग्री को भला कैसे पहचाना गया होगा? उन दिनों बच्चों को लिखना-पढ़ना सिखाने के लिए सबसे पहले कई सारे शब्दों की सूची दी जाती थी। फिर साहित्य से कुछ सरल वाक्य दिए जाते थे। इसलिए अगर कोई पटिया मिले, जिसमें केवल शब्दों या नामों की सूची हो या फिर सरल वाक्य हों तो हम पहचान सकते हैं कि ये बच्चों को सिखाने के लिए बनाए गए थे। इनमें से कई पटिये ऐसे भी थे जिनमें दो या तीन भाग थे। पहले भाग में कुछ शब्द या वाक्य बड़े अक्षरों में सफाई के साथ लिखे हुए थे और दूसरे भाग में वही शब्द कुछ आड़े-तिरछे या गलतियों के साथ लिखे हुए थे (चित्र-2)। अकसर उन्हें पोंछकर फिर से लिखा गया था। ऐसे पटिये इस घर से बहुत ज़्यादा मिले। इससे साफ था कि इस घर में बच्चों को पढ़ाया जा रहा था।

चकमक में कुछ महीने पहले हमने प्राचीन इराक के ही एक स्कूल जाने वाले बच्चे की कहानी छापी थी। उसमें स्कूल को 'एडुब्बा' कहा गया था। उनकी भाषा में एडुब्बा का मतलब है पटिया घर। तो मकान-एफ एक एडुब्बा था। यह किसी शिक्षक का घर था जहाँ वे बच्चों को सिखाते थे। दिन में स्कूल, बाकी समय घर। तो भई, इस तरह खोज हुई सबसे पुराने स्कूल की।

बातूनी

वीरेन्द्र दुबे
चित्र: नीलेश गेहलोत

एक चूहा बहुत बोलता था
जब देखो तब, जहाँ देखो वहाँ
बक-बक करता रहता था।
सबने मिलकर उसका नाम
बातूनी लाल रख दिया।

एक दिन रेडियो पर खबर आई कि शहर में एक बिल्ली आई है, उससे बातों में कोई नहीं जीत सकता। चूहों ने इतनी ही खबर सुनी और बातूनी लाल के घर दौड़े। वे बिल के बाहर बैठे अकेले ही बड़बड़ा रहे थे।

खबर देकर बहुत मान-मनौव्वल करके बातूनी लाल और बिल्ली को मिलवाने को राज़ी किया।

नहा-धोकर, इत्र-फुलेल लगाकर और नए कपड़े पहनकर सब शहर की ओर चल पड़े।

बिल्ली बोलती-बतियाती ही नहीं गुर्राती भी थी। झपटती भी थी। उसके पंजे मजबूत और नाखून पैने थे। लाल-लाल आँखें चमचमा रही थीं।

बिल्ली से आमना-सामना होते ही बातूनी लाल की घिग्गी बँध गई। उनको खूब उकसाया पर उनकी बोलती बन्द हो गई।

तभी दौड़ता-हाँफता एक चूहा आया जिसने पूरी खबर सुनी थी। वह बोला, “यह बिल्ली पत्थर की है!” फिर क्या था, बातूनी लाल ऐसे बोले कि चुप कराने वाले भी परेशान हो गए...

कुछ अटपटी कविताएँ

इल्ली-उल्ला हल्ला-गुल्ला

डॉ. जयजयराम आनन्द
चित्र: अमृता

मुरगा-मुरगी गए टहलने
दिल दोनों के लगे बहलने
दोनों घर का रस्ता भूले
हाथ-पाँव तब उनके फूले

काठ की हाड़ी पड़ी दिखाई
अगड़म-बगड़म खीर पकाई
पता नहीं जब लगा खीर का
सिर पर बोझा लदा पीर का

इल्ली-उल्ला हल्ला-गुल्ला
उसके पीछे लगा पुछल्ला
गुजर रहा था उधर से पिल्ला
भौंक उठा देखा जब बिल्ला

बल्लू ने खाया रसगुल्ला
साथी उसके बल्ली-लल्ला
उसके पीछे लगा पुछल्ला
दोनों ने माँगा रसगुल्ला

अगड़म-बगड़म हैं दो भाई
देखो तो उनकी चतुराई
सागर नापूँ डींग हाँकते
गागर थामें हाथ काँपते

करामात

निकोलाई रादलोव

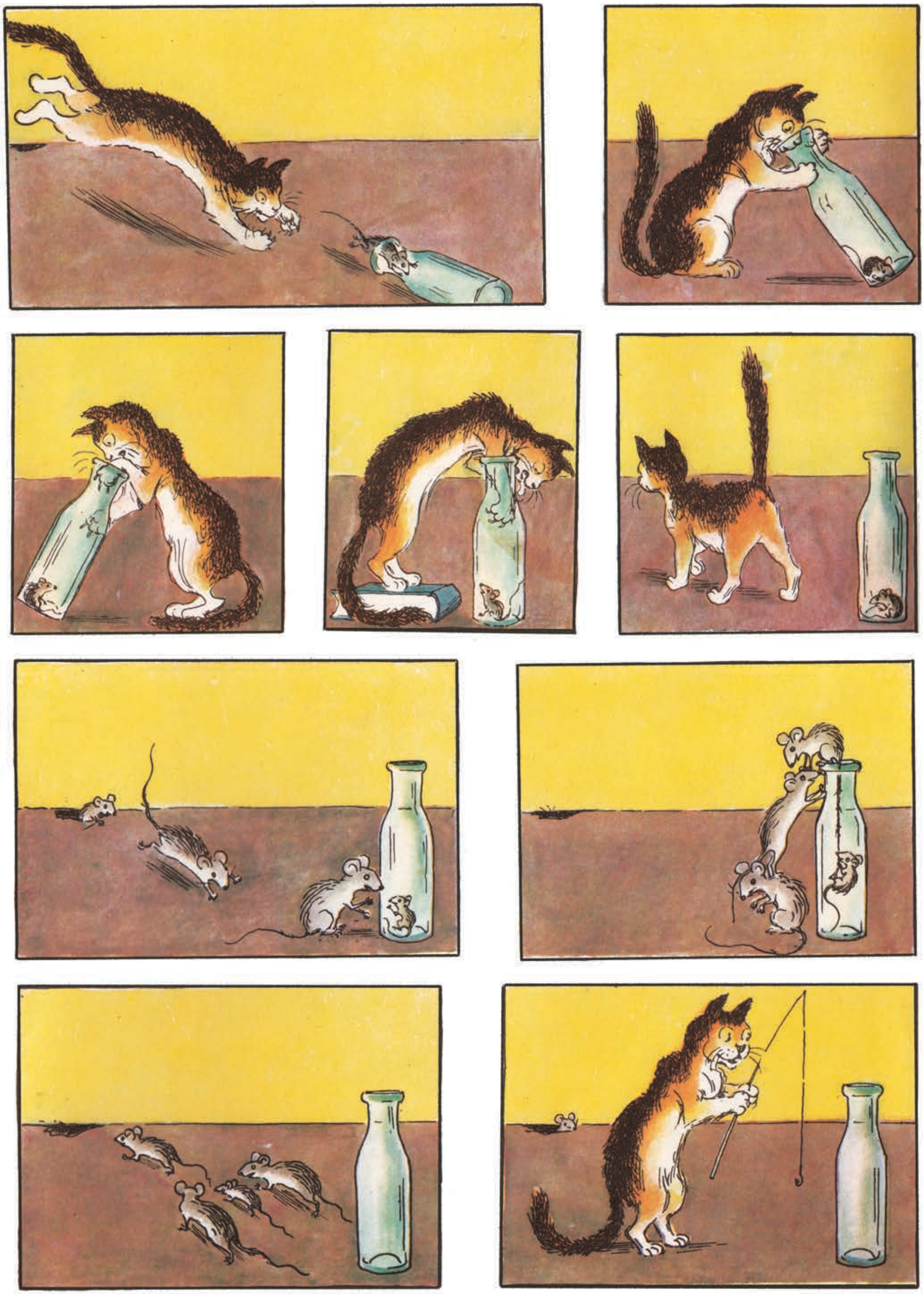

तुम भी जानो

शायद तुमने सुना होगा कि कॉकरोच इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे परमाणु विस्फोट तक सह सकते हैं। लेकिन यह बात पूरी तरह से सच नहीं है। विस्फोट के आसपास तो सब कुछ खतम हो जाएगा। विस्फोट से कुछ दूरी पर ज़रूर कॉकरोच बच जाएँगे क्योंकि इनमें हानिकारक किरणों को सहने की काफी क्षमता होती है। मज़ेदार बात यह है कि सिर्फ कॉकरोच ही नहीं, कई छोटे जीव बच सकते हैं - बिच्छू, चींटियाँ और कुछ बैक्टीरिया भी।

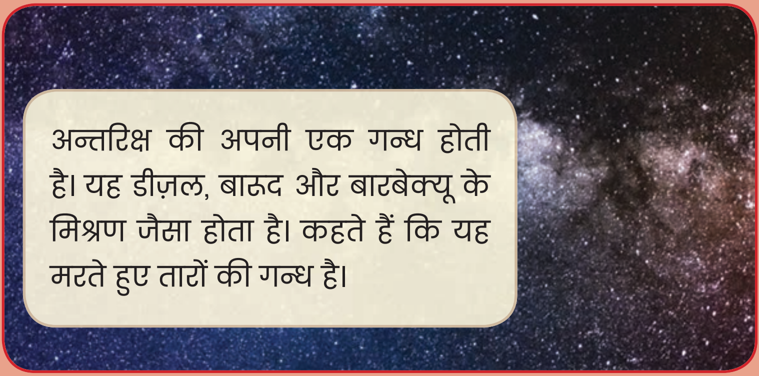

अन्तरिक्ष की अपनी एक गन्ध होती है। यह डीज़ल, बारूद और बारबेक्यू के मिश्रण जैसा होता है। कहते हैं कि यह मरते हुए तारों की गन्ध है।

इटली के एक छोटे शहर गिफोनी में हर साल बच्चों के फिल्मों की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता होती है। इसकी खासियत यह है कि फिल्मों को देखने-परखने वाले लगभग 2000 बच्चे होते हैं। 2018 में भारतीय फिल्म *चुस्कित* ने इस प्रतियोगिता में इनाम पाया। यह एक लद्दाखी लड़की की कहानी है जो न चल पाने पर भी स्कूल जाती है।

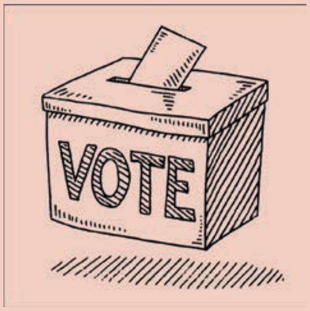

हमारे देश में चुनाव लड़ने के लिए उम्र कम-से-कम 25 साल होनी चाहिए जबकि हमारी आधे से ज़्यादा आबादी 25 साल से कम उम्र की है। इंगलैण्ड में 18 साल का व्यक्ति चुनाव लड़ सकता है।

मेघालय में तुमको जीवित पुल देखने को मिलेंगे। ये गूलर के करीबी रिश्तेदार *फायकस एलास्टिका* के पेड़ों की वायवीय जड़ों को मोड़कर और बाँधकर बनाए जाते हैं। ये सैकड़ों साल तक बरकरार रहते हैं।

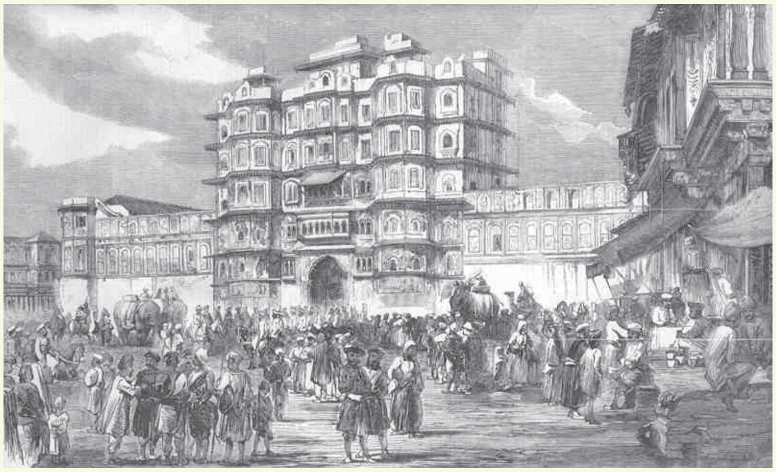

चित्रः राजबाड़ा चौक

इन्दौर डायरी

मालवा माटी और नगर इन्दौर

दिलीप चिंचालकर

मालवा माटी गहन गम्भीर,
डग-डग रोटी पग-पग नीर।

यह एक बहुत पुरानी कहावत है - मालवे की मिट्टी इतनी उर्वर है कि यहाँ पर रोटी और पानी की कोई कमी नहीं है। पुराने समय में जब बारिश की कमी के कारण गुजरात, राजस्थान या बुन्देलखण्ड में अकाल पड़ता था तो लोग गुज़ारे के लिए मालवा चले आते थे।

मालवा तो पठार है, समुद्र की सतह से कोई 550 मीटर ऊँचा। ऊँचाई के कारण यहाँ ज़्यादा गर्मी नहीं होती है। होती भी है तो दिन में और शाम एकदम सुहावनी होती है। इसीलिए तो कहते हैं 'शबे मालवा' - मालवा की रातें। ठण्ड और बारिश भी न ज़्यादा, न कम।

दरअसल मालवा की पहचान उसकी मिट्टी से है, काली चिकनी मिट्टी जिसमें गेहूँ तो बिना सिंचाई के ही हो जाता था। और फिर मालवे की अफीम की ख्याति चीन तक पहुँची थी। पैदावार बेचने के लिए पूरे इलाके में कई प्रसिद्ध मण्डियाँ थीं जिनमें से एक प्रमुख अनाज मण्डी इन्द्रेश्वर मन्दिर के पास थी। उस इन्द्रेश्वर से पास-पड़ोस का नाम पहले इन्दापुर और फिर इन्दौर पड़ा।

इन्दौर की शुरुआत

मुगलों के समय में यह इलाका ब्राह्मण ज़मींदारों के हाथ में था, जिनकी उपाधि थी राव। कहते हैं कि इसी परिवार के लोगों ने कान्ह और सरस्वती नदी के संगम के दक्षिण में यह कस्बा बसाया था। वहाँ उनका महल 'बड़ा रावला' कहलाता था। आजकल यह 'जूनी' (पुराना) इन्दौर कहलाता है। यह परिवार आज भी इन्दौर में ज़मींदार परिवार के नाम से मौजूद है।

अठारहवीं सदी में मुगल शासन डगमगाने लगा और मराठे मालवा पर हमला करने लगे। मराठा सरदारों में मल्हारराव होलकर बहुत पराक्रमी था। मल्हारराव ने इन्दौर के ज़मींदार नन्दलाल राव से समझौता कर लिया और उसकी सहायता से उस इलाके को मुगल जागीरदारों से 1732 में जीत लिया।

आधुनिक इन्दौर की कहानी तो सन् 1732-33 में शुरू होती है, जब इन्दौर की जागीर गौतमाबाई होलकर को मिली। पुणे के बाजीराव पेशवा के लिए इन्दौर को मल्हारराव ने जीता था। मगर वह ठहरा फौजी, कब लड़ाई में काम आ जाए। इसलिए पेशवा ने जागीर उसकी पत्नी को दी।

इन्दौर को बसाया सूबेदार मल्हारराव ने। कान्ह नदी किनारे ऊँचाई पर ज़मीन देखकर उस पर पेशवा की शान को शोभा दे ऐसा राजबाड़ा बनवाया। राजबाड़े का दरवाज़ा तो सात मंज़िला था मगर पीछे का रिहायशी हिस्सा सामान्य था क्योंकि पेशवा तो राजा थे। मल्हारराव अभी-अभी शासक बना था, अब तक तो वह एक किसान फौजी ही था। उसने घर-परिवार के रहने लायक अपनी हैसियत का निवास बनाया।

चित्रः पुराना राजबाड़ा

मल्हारराव ने राजबाड़े की ज़मीन जिससे ली थी उसके नाम से 'कानूनगो बाखल' नाम की बस्ती बनाई। एक मोहल्ला 'गौतमपुरा', एक मोहल्ला 'अहिल्या-पलटन', अपनी पत्नी और बहु के नाम से बसाया। इस तरह अपने साथ दक्खन से आए लोगों को नए नगर में बसाया। राजबाड़े के आसपास पेशे के हिसाब से बाज़ार बनाए - सराफा, मारोठया, पिपली बाज़ार वगैरह। ये नया इन्दौर था। यहाँ से एकाध मील की दूरी पर जूनी इन्दौर था। अब ये दोनों आधुनिक इन्दौर में समा गए हैं।

मल्हारराव का बेटा खण्डेराव बड़ा नाकारा निकला। न राज का काम देखता न फौज का। एक बार जोश में आकर लड़ा तो प्राण खो बैठा। उसकी पत्नी अहिल्याबाई बहुत काबिल महिला थी। उन दिनों सती हो जाने का बड़ा चलन था। मगर मल्हारराव ने उसे यों ही मरने नहीं दिया। उसे राजपाट सम्भालने के लिए तैयार किया। 1766 में मल्हारराव के मरने के बाद राव अहिल्या ने ही होलकरों का राजपाट सम्भाला। लेकिन वह इन्दौर में नहीं रही। उसने महेश्वर को अपनी राजधानी बनाया और वहीं से राजकार्य करते हुए देश भर में मन्दिर और धर्मशालाएँ बनवाईं। राजनैतिक स्थिरता के चलते इन्दौर में व्यापार फलने-फूलने लगा और यह एक महत्वपूर्ण शहर बनता गया। अगले 220 वर्ष मालवा में होलकरों का राज रहा। इन्दौर होलकरों की राजधानी 1818 के बाद बनी। तब होलकरों के ऊपर अंग्रेज़ों का वरदहस्त था। इन्दौर में अब अंग्रेज़ रेसीडेंट रहने लगे। रेसिडेंसी कोठी इसकी गवाह है।

अंग्रेज़ लोग चाहते थे कि इन्दौर जल्दी ही उज्जैन को पीछे छोड़ दे। उज्जैन मालवा की प्राचीन राजधानी थी और उस समय सिन्धिया घराने अधीन थी। दोनों शहरों के व्यापारियों के बीच ज़बरदस्त होड़ मची थी - एक ओर सिन्धियाशाही व्यापारी थे तो दूसरी ओर होलकरशाही व्यापारी। जीत तो इन्दौर की ही हुई और इन्दौर एक आधुनिक व्यापारी शहर के रूप में विकसित हुआ।

मल्हारराव और अहिल्याबाई ने इन्दौर को अच्छी शुरुआत दी तो तुकोजीराव (द्वितीय), शिवाजीराव और यशवन्तराव उन्नीसवीं सदी के अन्त और बीसवीं सदी में इन्दौर को आधुनिक ज़माने में ले आए। आज़ादी मिलने से पहले के इन्दौर में बच्चों को स्कूल जाना अनिवार्य था। स्कूल जाने के लिए सरकारी बैलगाड़ियाँ हुआ करती थीं। 1868 में दो छात्र रामचन्द्र डिके और बलवन्त जाम्भेकर पहली बार मैट्रिक का इम्तहान पास हुए तो उनकी हाथी पर शोभा-यात्रा निकाली गई।

इन्दौर के सेठ-साहूकार

राजाओं और सेठ-साहूकारों के शहर में उनके किस्से भी अनन्त हैं।

सेठ हुकुमचन्द ने शहर में कपड़ा मिलें लाकर इन्दौर को दुनिया के कपड़ा-उद्योग के नक्शे पर जगह दिलाई। मगर इन्दौर में मिल की मशीनें खण्डवा से हाथियों पर लादकर लानी पड़ीं। क्योंकि इन्दौर में रेल लाइन नहीं थी। तब तुकोजीराव (द्वितीय) ने अंग्रेज़ों को 1863 में

चित्र: तुकोजीराव द्वितीय के विवाह का समारोह

लिखा कि इन्दौर को खण्डवा और राजपूताना लाइन से जोड़ा जाए। अंग्रेज़ सरकार विन्ध्याचल-सतपुड़ा की पहाड़ियों और नर्मदा नदी को रास्ते की बाधा बताकर टाल-मटोल कर रही थी। छह साल तक लिखा-पढ़ी चलती रही। आखिर में होलकर महाराज ने ही अंग्रेज़ों को 101 वर्षों के लिए एक करोड़ रुपयों का कर्ज दिया और वर्ष 1878 में रेल इन्दौर आई। तब महाराज ने इस रेल का नाम भी 'होलकर स्टेट रेलवे' करवा के छोड़ा।

तुकोजीराव के ही पुत्र शिवाजीराव थे। वे बड़े शरारती और कुछ हद तक सनकी थे। उनका शौक था राजबाड़े के छज्जे पर खड़े हो दूरबीन से शहर और अपनी प्रजा को देखना। एक बार वे शाम को छज्जे पर बैठे हवाखोरी कर रहे थे। तभी एक सुन्दर चार घोड़ोंवाली बग्घी चाँदी की घण्टियाँ टुनटुनाते हुए खजूरी बाज़ार की ओर से आकर कृष्णपुरा की ओर निकल गई। महाराज को यह बात खटकी। *मेरे सामने चार घोड़ों की बग्घी में शान दिखाए यह किसकी हिमाकत है?* उन्होंने गुस्से में भरकर दीवानजी से पता लगाने को कहा कि वो कौन नामाकूल था। थोड़ी देर बाद जानकारी मिली कि अभी-अभी बग्घी में सेठ हुकुमचन्दजी गुज़रे थे। अब महाराज सकपकाए। सेठ हुकुमचन्द नाम के ही सेठ नहीं बल्कि बड़े उदार और स्वाभिमानी थे। उनका बड़ा नाम था।

दीवानजी ने ही सलाह दी कि गुस्ताखी की सजा अवश्य दी जाए मगर वह सज़ा न लगे। उन्हें एक रुपये का जुर्माना किया जाए। ऐसा ही किया गया। दूसरे दिन दरबार में सेठजी के कारिन्दे मखमली कपड़े में ढँका एक थाल लेकर आए और महाराज को नज़र किया। पूछने पर पता चला कि उसमें जुर्माने के एक सहस्त्र रुपये हैं। दीवानजी ने कहा कि जुर्माना तो एक रुपया था। मकसद था महाराज की सेवा में एक रुपया पेश करना। सेठजी ने कहा कि फिर वह दण्ड ही क्यों न हो, महाराज की शान में कमतर न लगे।

यूरोप में जब दूसरा विश्वयुद्ध चल रहा था तब यशवन्तराव महाराज शासक थे। अंग्रेज़ों की मदद की खातिर उन्होंने खुद होलकर सेना की एक बटालियन तैयार कर लाम पर भेजी थी। इन्दौर के इन सैनिकों से मिलने और उनका हौसला बढ़ाने के लिए वे सन 1943 में स्वयं इराक-ईरान गए। उनके प्रयत्नों से इन्दौर के नागरिकों ने पाँच हज़ार रुपए एकत्रित कर लन्दन भेजे। उन रुपयों से एक बमवर्षक विमान की कीमत निकल आई। उस विमान को नाम दिया गया 'सिटी ऑफ इन्दौर'। यह इन्दौरी विमान अफ्रीका के मोर्चों पर बमबारी किया करता था। बाद में वह समुद्र में गिरकर डूब गया यह बात अलहदा है।

चित्र: एम एफ हुसैन की पेंटिंग *अंग्रेज़ लार्ड और लेडी* का स्वागत करते महाराजा होलकर

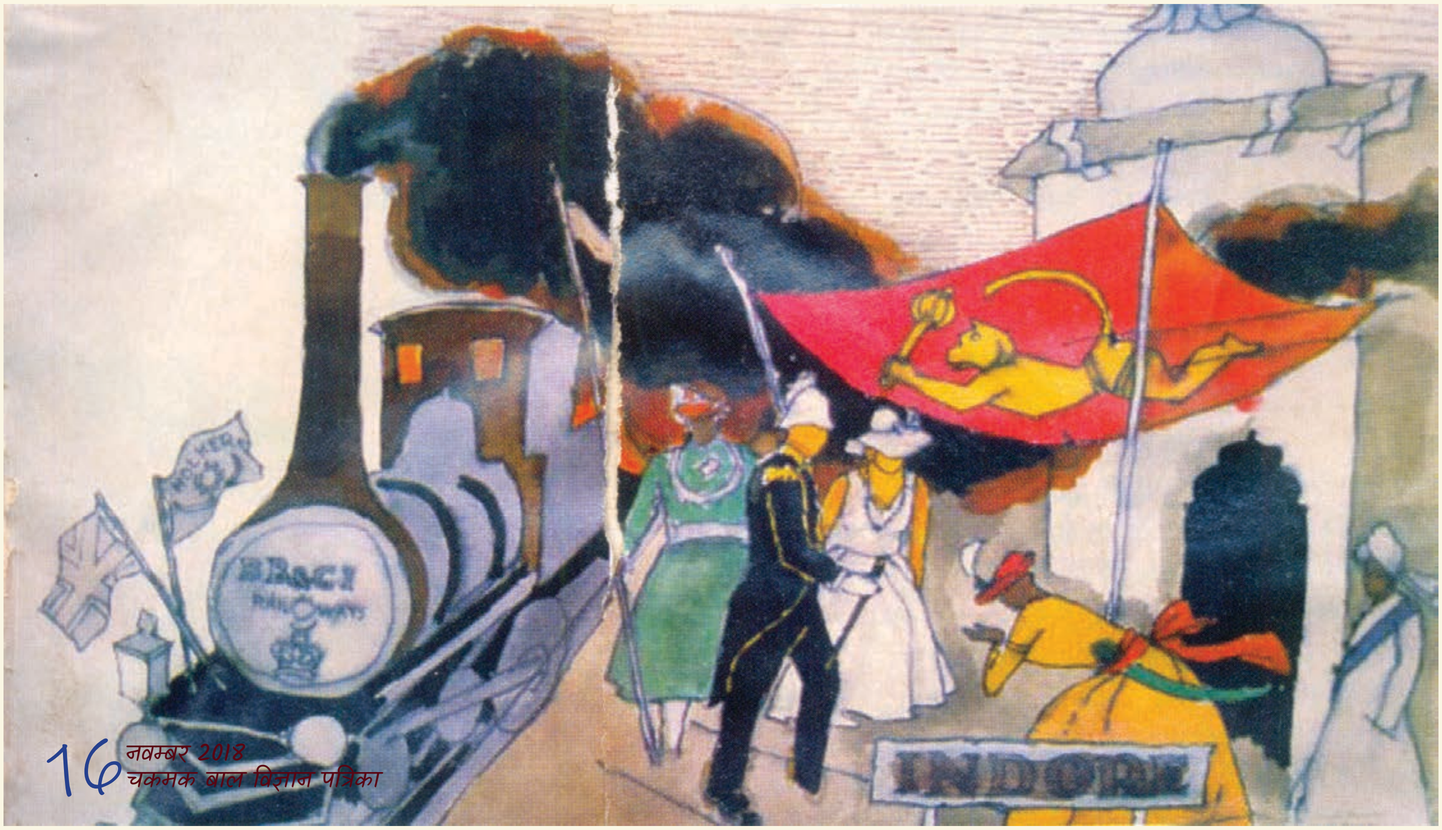

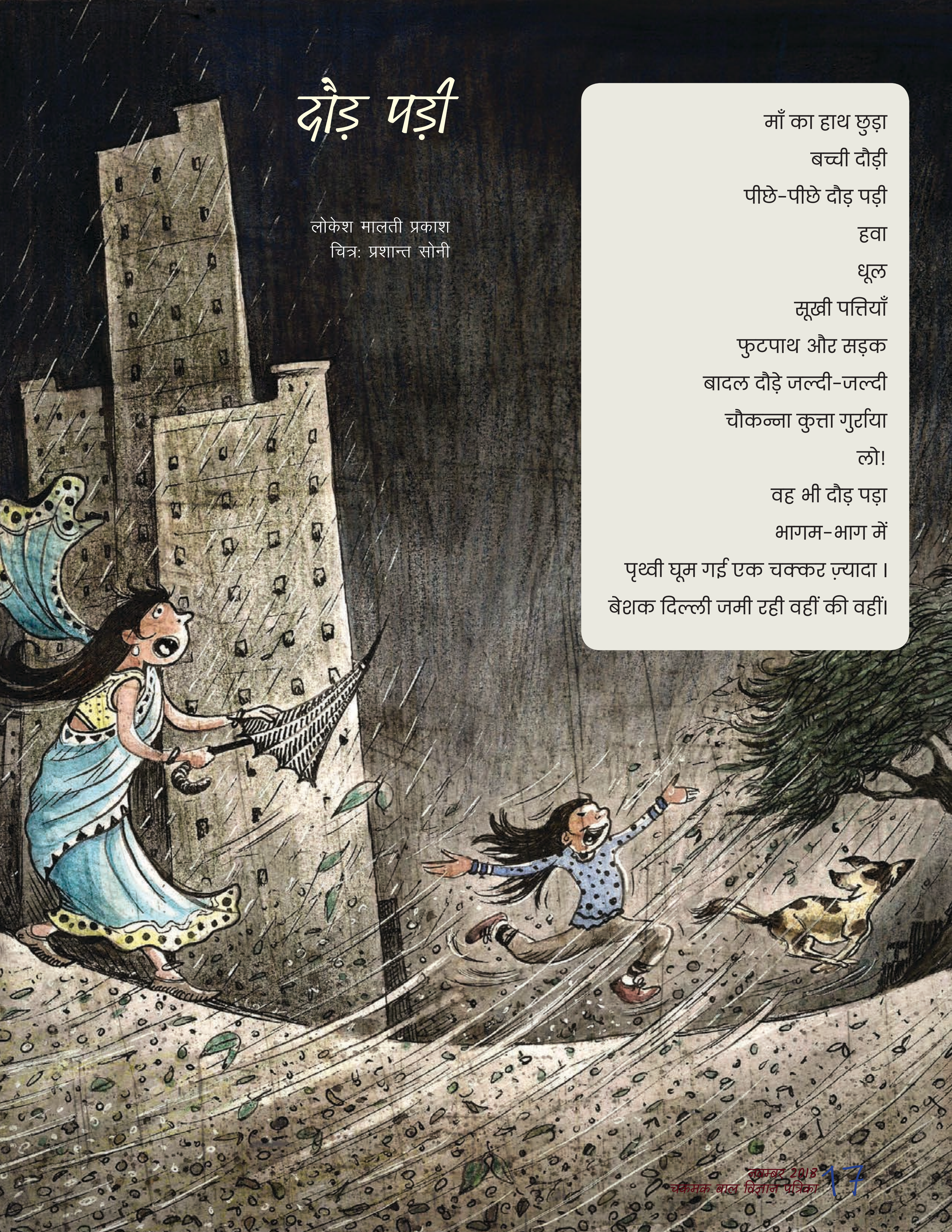

दौड़ पड़ी

लोकेश मालती प्रकाश
चित्र: प्रशान्त सोनी

माँ का हाथ छुड़ा
बच्ची दौड़ी
पीछे-पीछे दौड़ पड़ी
हवा
धूल
सूखी पत्तियाँ
फुटपाथ और सड़क
बादल दौड़े जल्दी-जल्दी
चौकन्ना कुत्ता गुर्राया
लो!
वह भी दौड़ पड़ा
भागम-भाग में
पृथ्वी घूम गई एक चक्कर ज़्यादा।
बेशक दिल्ली जमी रही वहीं की वहीं।

आज़ादी

कुलदीप शर्मा
चित्र: रंजीत बालमुचू

“निराला सर्कस” एक जाना-माना सर्कस था। उसके सारे शो हमेशा फुल रहते। दूर-दूर से लोग उसे देखने आते थे। खासतौर पर बच्चों को तो वह बहुत ही पसन्द था। ठुमक-ठुमककर नाच दिखाने वाला भालू, फुटबॉल खेलने वाला हाथी, या एक पहिये की साइकिल चलाने वाला बन्दर। अपनी पीठ पर बन्दर को बिठाकर दौड़ने वाला कुत्ता हो या फिर एक गोले से दूसरे गोले में होकर कूदने वाला बब्बर शेर - ये सारे दर्शकों और खासतौर पर बच्चों को अपनी कुर्सी पर उछलने के लिए मजबूर कर देते थे। लेकिन शो के समय हँसते-हँसते करतब दिखाने वाले जानवरों के पीछे के दर्द को शायद ही कोई समझता होगा। शो के बाद वे सभी पिंजड़े में कैद हो जाते थे और थोड़ी-सी गलती पर हंटर की मार से थर-थर काँपते थे।

निराला सर्कस का मालिक जगन अपने जानवरों पर बहुत अत्याचार करता था। सर्कस में उनसे दिन भर काम लिया जाता था और भरपेट खाना भी नहीं दिया जाता था। कई बार तो खेल दिखाते समय हुई छोटी-सी गलती के लिए भी 2-2 दिन तक जानवरों को भूखा रखा जाता था और हंटर से मारा भी जाता था। जानवरों पर होने वाले अत्याचार दिन ब दिन बढ़ते ही जा रहे थे। सारे जानवर अपनी इस ज़िन्दगी से तंग आ गए थे।

एक दिन जब सोनू हाथी ने करतब दिखाते समय फुटबॉल को लात मारने से आनाकानी की तो जगन ने सोनू की गर्दन पर अंकुश चुभा दिया। अंकुश चुभते ही सोनू हाथी का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच गया और वो गुस्से में इधर-उधर दौड़ने लगा। सामान को उठा-उठाकर फेंकने लगा। सोनू दूसरे जानवरों के पिंजड़े की तरफ दौड़ा और पिंजड़ों को तोड़ने लगा। सारे जानवर सोनू के इस रूप को देखकर डर गए। लेकिन ये क्या! सोनू तो सभी जानवरों को पिंजड़े से बाहर निकालकर उन्हें आज़ाद कराना चाहता था। थोड़ी ही देर में सारे जानवर पिंजड़े से बाहर हो गए। उधर सर्कस के कर्मचारी एक भी जानवर को पकड़ नहीं पा रहे थे। शेरू दादा का इशारा मिलते ही सारे जानवर जंगल की ओर दौड़ने लगे। सबसे आगे उड़ता हुआ हरियल तोता सभी जानवरों को रास्ता बता रहा था। जब सारे जानवर शहर की सड़कों पर दौड़ रहे थे तो लोगों ने अपने-अपने घरों के खिड़की-दरवाज़े बन्द कर लिए। लोग डर के मारे थर-थर काँपने लगे। लेकिन सर्कस के जानवरों ने किसी को रत्ती भर भी नुकसान नहीं पहुँचाया। आगे-आगे जानवर और पीछे-पीछे सर्कस के कर्मचारी दौड़ रहे थे। आज़ादी की चाह में खुशी से दौड़ते जानवरों को अब कहाँ सुध थी। वो तो भागे जा रहे थे हरित वन की ओर। आज़ादी का नशा ही कुछ ऐसा होता है।

घोड़े फुर्र-फुर्र क्यों करते हैं?

अरविन्द गुप्ते

यह तो सब जानते हैं कि घोड़े समय-समय पर नाक से फुर्र-फुर्र की आवाज़ निकालते हैं। लेकिन वे ऐसा क्यों करते हैं इसके बारे कभी तुमने सोचा है? जानकारों की इस विषय पर अलग-अलग राय है। कुछ लोग मानते हैं कि वे केवल अपनी नाक साफ करने के लिए ऐसा करते हैं - जैसा इंसान करते हैं। कुछ अन्य लोग मानते हैं कि यदि घोड़ा दुखी या नाराज़ हो तो वह ऐसी आवाज़ करता है। तीसरा समूह मानता है कि घोड़ा खुश होने पर फुर्र-फुर्र करता है। यानी कि फुर्र-फुर्र करना घोड़े के मूड पर निर्भर करता है या हवा में धूल-कीटों की मात्रा पर।

हाल में फ्रांस में कुछ लोगों ने इस गुत्थी को सुलझाने का प्रयास किया है। उन्होंने देखा कि कुछ घोड़े हमेशा समूहों में खुले चरागाहों में रहते हैं, जबकि सवारी के काम आने वाले घोड़े हमेशा संकरे अस्तबलों में अकेले रहते हैं। खुली हवा में रहने वाले घोड़े अधिक बार फुर्र-फुर्र की आवाज़ करते हैं। पहले उन्होंने जानने की

कोशिश की कि क्या यह हवा के कारण होता है कि वही घोड़े अलग-अलग जगहों पर भी उतना ही फुर्र-फुर्र करते हैं? वे 48 घोड़ों को अस्तबल से चारागाह जैसी खुली जगह में ले गए और उनके फुर्र-फुर्र करने की संख्या गिनी। पता चला कि खुली हवा में ये घोड़े अधिक बार फुर्र-फुर्र करते हैं। इसके विपरीत, खुली हवा में रहने वाले घोड़ों को जब उन्होंने अस्तबल में रखा तो पता लगा कि वे कम बार फुर्र-फुर्र करते हैं। तो कुल मिलाकर यह समझ में आया कि सभी घोड़े खुली हवा में ज़्यादा फुर्र-फुर्र करते हैं।

खुली हवा में वे ज़्यादा फुर्र-फुर्र क्यों करते होंगे? लोगों ने कहा तो था कि यह इसलिए हो सकता है कि खुली हवा में धूल-कीट घुसने के कारण नाक ज़्यादा बार साफ करने की ज़रूरत होगी, लेकिन क्या यह घोड़ों के मूड पर भी निर्भर करता है? इसका पता लगाने के लिए तो पहले यह देखना था कि घोड़े के मूड का हम कैसे पता कर सकते हैं? ऐसा है कि घोड़े जब खुश होते हैं तो उनके कान सामने की ओर झुक जाते हैं। तो फ्रांस में अध्ययन करने वालों ने यह भी देखा कि खुली हवा में घोड़ों के कान खड़े रहते हैं या झुके। उन्होंने पाया कि अस्तबल की तुलना में खुली हवा में घोड़ों के कान ज़्यादा झुके रहते हैं। यानी कि घोड़े की फुर्र-फुर्र उसके खुश होने का एक लक्षण है।

स्रोत फीचर्स से साभार

भूलभुलैया

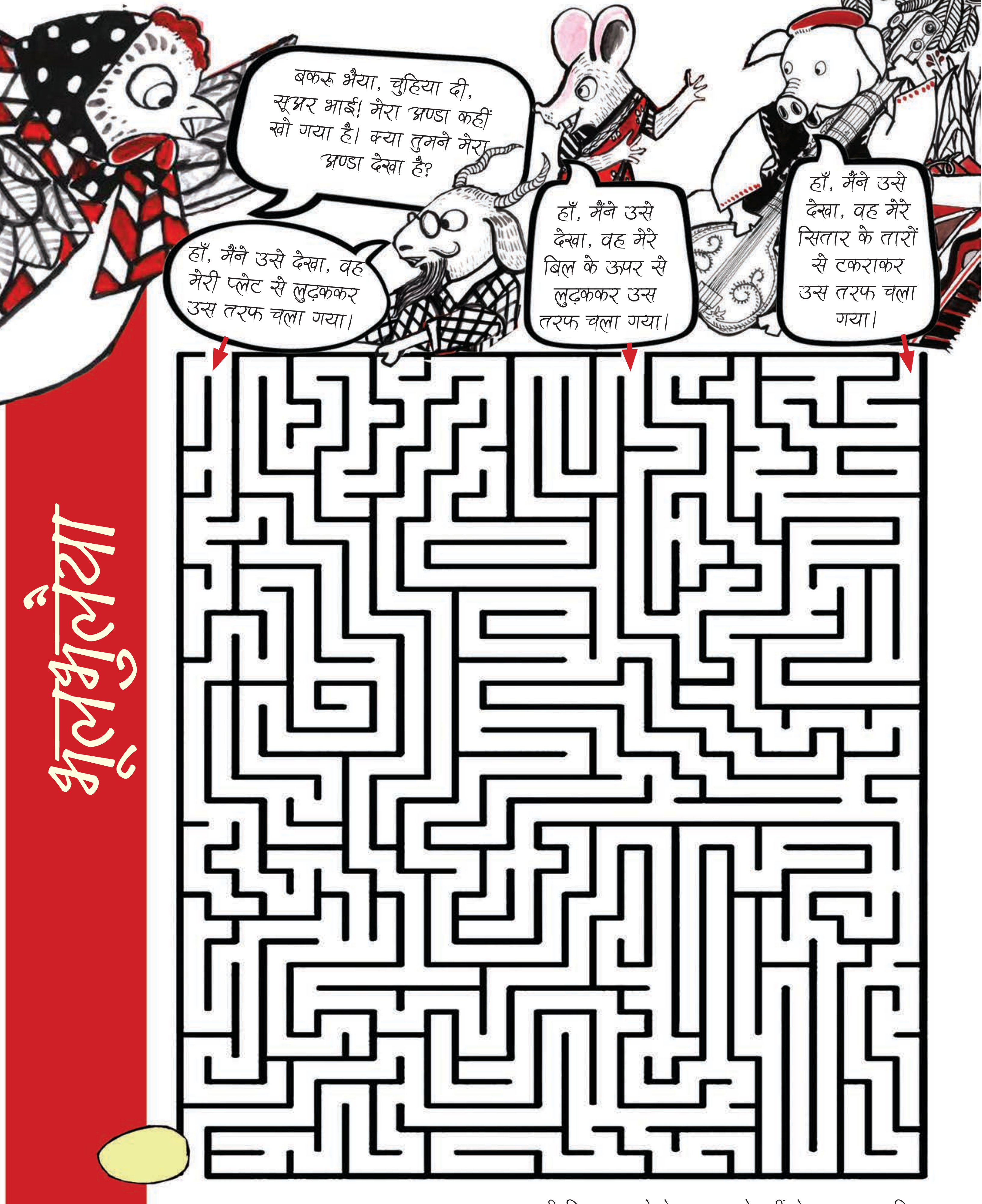

एकलव्य की किताब *तुमने मेरा अण्डा तो नहीं देखा?* पर आधारित।
चित्र: कनक शशि

ऊबड़-खाबड़ नाम

प्रभात
चित्र: वृषाली जोशी

मोर का नाम पाँखुरी था
भोर का नाम बाँसुरी था

भेड़ का नाम उर्मिला था
पेड़ का नाम रंगीला था

रेल का नाम था फूलकली
जेल का नाम था कुसुमगली

नाम फूल का आरी था
आरी का रामदुलारी था

नाम सड़क का जीभ था
दूर का नाम करीब था।

झाड़ का नाम पहाड़ी था
ऊँट का नाम कबाड़ी था

ऊबड़-खाबड़ नामों को सुन
खेत दुबककर सो गया।

देर रात तक ठीक-ठाक थे
सुबह-सुबह क्या हो गया?

कैसे बना यह विशेषांक

नवम्बर की चकमक अगर तुम्हें कुछ अलग-सी दिख रही है तो इसका श्रेय हमारे कुछ बाल साथियों को जाता है। हमने सोचा था कि बाल दिवस की खुशी में नवम्बर अंक 'मेरा पन्ना विशेषांक' हो। यानी कि इसमें बच्चों की रचनाएँ हों, साथ ही इसका सम्पादन भी बच्चे ही करें।

पहले हमने जानने की कोशिश की कि बच्चों की पसन्द क्या है - कैसी पत्रिका पसन्द करते हैं, किस तरह के लेख, कहानी या कविता पढ़ना पसन्द करेंगे। 7 संस्थाओं और स्कूलों से छठी से नौवीं कक्षाओं के 25 बच्चों को हमने ऑफिस में बुलाया। हम सबने साथ में मिलकर पहेलियाँ बूझीं, लेख-कविताएँ पढ़ीं। चकमक और उसके अलावा कई सारी बाल पत्रिकाओं के पन्ने पलटे, और खूब सारी बातें कीं। थोड़ी बहुत मस्ती भी की। हम सबको समझ में आने लगा कि बच्चों की क्या पसन्द है, और यह भी कि क्या बिलकुल पसन्द नहीं है!

फिर नवम्बर अंक की तैयारी का काम शुरू किया। काम का बँटवारा कुछ यूँ हुआ- बच्चे यह तय करेंगे कि अंक में क्या-क्या सामग्री होना चाहिए, कितने पन्नों की होनी चाहिए। यही टीम यह भी तय करेगी कि रचनाएँ किस किस्म की होंगी, उनके लिए कैसे चित्र बनने चाहिए। हमारा काम था रचनाएँ जुटाना और बच्चों के सामने रखना। चुनी गई रचनाओं के लिए चित्र बनवाना और डिज़ाइन तैयार करना भी हमारे ज़िम्मे था।

हमारी सम्पादकीय टीम में 11 बच्चे शामिल हुए। अगले कुछ हफ्तों तक हर रविवार 4-5 घण्टे हम साथ बैठते। सबने जम के काम किया। धीरे-धीरे नवम्बर अंक बनता चला गया। एक अलग-सा रूप है इसका, एक अलग-सा अन्दाज़। पढ़कर बताना ज़रूर कि तुम्हें कैसी लगी यह चकमक।

...कुछ सीखने के लिए मिला और कुछ सिखाने के लिए मिला...

रुक्सार

हमने जूस पिया था, चिप्स खाए थे, बिस्किट खाए थे। और मुझे चुटकुला भी पढ़ने में अच्छा लगा था। ...वह कह रहे थे कि इस कहानी में लड़का होना चाहिए कि लड़की होनी चाहिए। हमने कहा कि लड़की होनी चाहिए और हम सब बच्चों में बहस होने लगी।

इकरा

यहाँ पर मैं बहुत मज़े करती हूँ। सब लोग आपस में अच्छे से बात करते हैं।

सानिया

बहुत सारे दोस्त बने, मैगज़ीन कैसे छापते हैं, वह सब पसन्द आया।

अनीसा

आभार

मुस्कान
अमन
इकरा सिद्दीकी
काजल नेताम
कीर्ति
गुलाब
दिव्या पवार
द्वारका नेताम
नूमान
शशि
शिवानी तनेजा
राजा
रानी
त्रिकुटा मड़ावी

केन्द्रीय विद्यालय, क्रमांक 1
अनन्त शर्मा
आनन्द कु. पाण्डे
माधुरी राजगुरू
रितिका गौर

आनन्द निकेतन डैमोक्रेटिक स्कूल
अदा जैसवाल
अनीसा धीमान
अनिल सिंह
अम्बर
बीहू आनन्द
पार्थ यादव

राजा भोज हायर सैकेण्डरी स्कूल
अनुज झा
कंचन पटेल
रुक्सार खान
सरोज शर्मा
सानिया जाटव

बचपन
खुशबू सिंह
पल्लवी मोहाबे
यामिनी नेताम
राजकुमारी
राजीव भार्गव

सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या शाला
खुशी खान
फिज़ा खान
मोहिनी आठिया
सोनम अंसारी
संजना बम्मा

शारदा विद्या मन्दिर
मानस प. शर्मा

विहान
हेमन्त देवलेकर

अश्विनी राजपूत
आनन्द प्रकाश
ओझा
कार्तिक शर्मा
जलज वर्मा
ज़ुबैर सिद्दीकी
दिनेश दामोरे
दीपाली शुक्ला
वन्दना भोयर
शिवनारायण गौर
शीला रावत
सी. एन. सुब्रह्मण्यम
सीमा
ऋषभ पालीवाल

कहानी पूरी करो

आनन्द कु. पाण्डे
और बीहू आनन्द

शाम का समय था। गर्मी के दिन थे इसीलिए चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। मैं अपने बिस्तर पर बैठकर अपने दोस्तों के बारे में सोच रही थी कि अभी तक वे क्यों नहीं आए। तभी मम्मी की आवाज़ आई, “रूमाना, तुम्हारे दोस्त आए हैं। तुम्हें खेलने के लिए बुला रहे हैं।”

मैंने अपना बैट उठाया और तुरन्त उनके साथ खेलने भाग गई। हमने आम के बगीचे में जाकर खेलना शुरू कर दिया। बगीचे के बीचों-बीच एक खाली जगह थी। हम अकसर वहीं खेला करते थे। हम खेल ही रहे थे कि रेहान ने एक ज़ोरदार शॉट मारा। बॉल झाड़ियों में चली गई। मैं बॉल उठाने झाड़ियों में गई। मैं बॉल ढूँढ ही रही थी कि मैंने देखा...

अब रूमाना ने क्या देखा होगा, यह तुम बताना। कहानी पूरी करके हमें भेजना। अगले अंक में शायद तुम्हारी यह कहानी छप जाए।

क्यों

शिवानी यादव
चित्र: वर्षिनी रघुपति

चन्दा ये चमकीला क्यों?
सागर नीला-नीला क्यों?
सूरज ये भड़कीला क्यों?
सावन बड़ा सजीला क्यों?
कोई तो बतलाए मुझे।
नीबू का रंग पीला क्यों?
मम्मी इतनी प्यारी क्यों?
पढ़ने की लाचारी क्यों?
मस्ती से सब रोक रहे,
गप्पों पर पहरेदारी क्यों?
टोका-टाकी सभी करें,
ऐसी यह होशियारी क्यों?
पापा से डर लगता क्यों?
बातों में मन लगता क्यों?
झाकूँ, देखूँ इधर-उधर
सैर करें हम डगर-डगर
जी में ऐसा आता क्यों?
उधम मचाना भाता क्यों?

शिवानी यादव, आठवीं, स्वामी विवेकानन्द विद्यालय, लोधर ग्राम, कानपुर, उत्तर प्रदेश

चित्र: वर्षिनी रघुपति, साढ़े सात वर्ष, कैसकेड फैमिली लर्निंग सोसाइटी, चेन्नई, तमिलनाडु

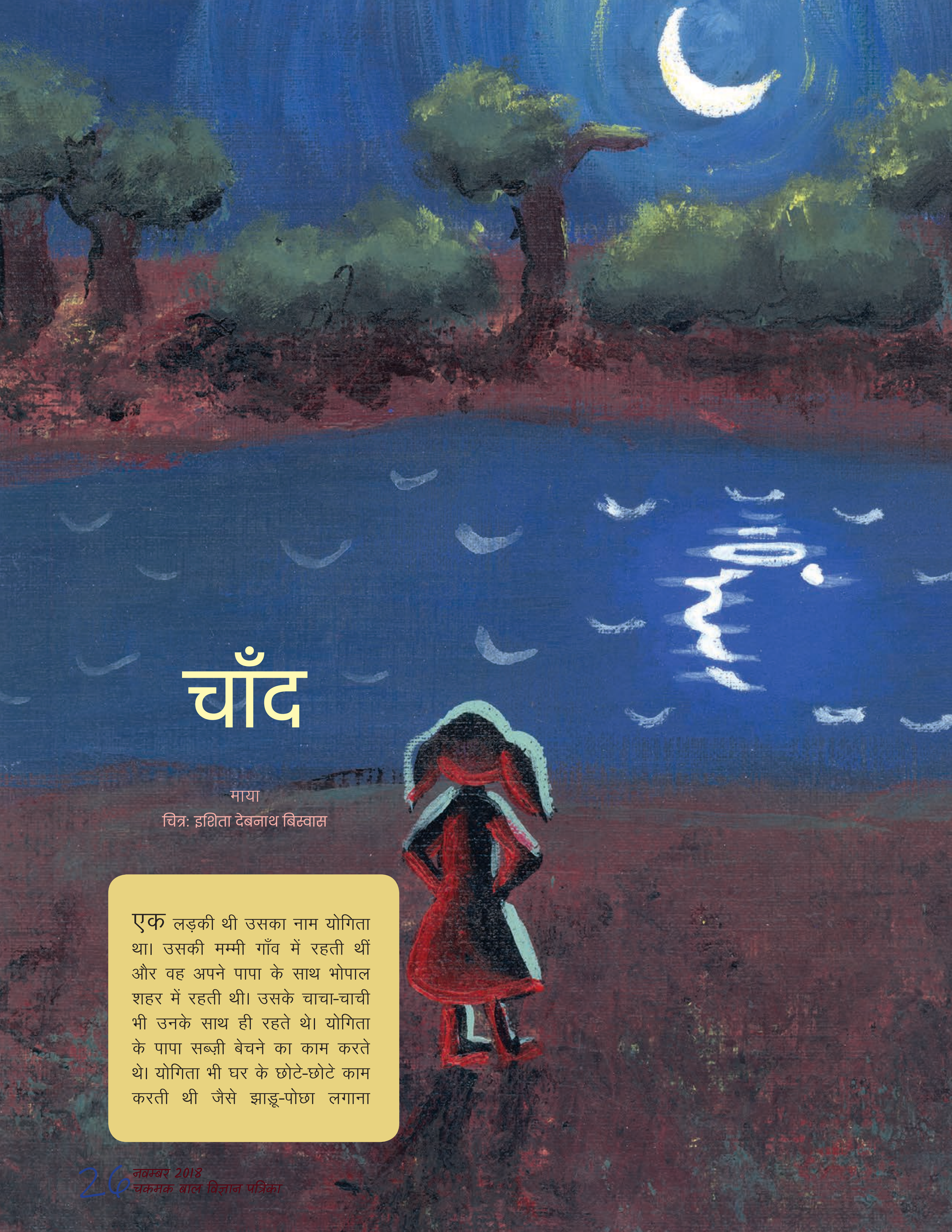

चाँद

माया
चित्र: इशिता देबनाथ बिस्वास

एक लड़की थी उसका नाम योगिता था। उसकी मम्मी गाँव में रहती थीं और वह अपने पापा के साथ भोपाल शहर में रहती थी। उसके चाचा-चाची भी उनके साथ ही रहते थे। योगिता के पापा सब्ज़ी बेचने का काम करते थे। योगिता भी घर के छोटे-छोटे काम करती थी जैसे झाड़ू-पोछा लगाना

और पानी भरना आदि। वह अपनी चाची के बच्चे को भी सम्भालती थी। वह घर के पास के एक सरकारी स्कूल में पढ़ने भी जाया करती थी। दोपहर में उसकी छुट्टी हो जाने के बाद वह घर का काम करती थी। उसके पापा और चाचा उसको बहुत प्यार करते थे। पापा और चाचा कभी उसके लिए जलेबी लाते तो कभी नई-नई फ्रॉक भी लाते थे। उसके चाचा शाम को पढ़ाते भी थे। योगिता को जलेबी बहुत पसन्द थी। योगिता की चाची बहुत गुस्से वाली थीं। जो भी काम करने को कहती थीं वह करना ही पड़ता था, चाहे वह काम आए या न आए। काम करने के लिए मना करने पर चाची मारती थीं। योगिता के पापा रात को 9 बजे आते थे। योगिता अपने पापा का इन्तज़ार करती कि आज उसने दिन भर जो-जो किया वह बता सके। इसके लिए वह कभी जागती तो कभी वह जल्दी सो जाती थी। योगिता की चाची उसको घर के बाहर ज़्यादा खेलने नहीं देती थीं। लेकिन योगिता चुपके-चुपके घर से बाहर निकल जाती थी। जब योगिता खेलकर घर में आती, तब चाची उसे एक-दो डण्डी मार देती थीं। वह रोते-रोते छत पर चली जाती थी और चाँद को देखकर कुछ बुदबुदाती थी। वह चाँद को अपना दोस्त मानती थी। हर बात चाँद को बताती थी - आज ये हुआ, आज वो हुआ। उसकी छोटी-छोटी गलतियाँ उसको मार खाने के लिए मजबूर कर देती थीं जैसे, योगिता को दाल में जीरा खाना पसन्द नहीं था। वह जीरे को छाँटकर फेंक देती, तो कभी बुखार आने पर गोली न खाकर पानी की टंकी के पीछे फेंक देती। ये सब बातें चाची को पता चल जातीं तो वो मारती थीं।

सुबह, दोपहर और शाम को जितने भी मार खाने के कारण होते, उन सबकी शिकायत योगिता चाँद से करती थी। चाँद से बात करना उसकी आदत बन गई थी। खुद से सवाल पूछती और जवाब देती। सोचती कि चाँद ने जवाब दिया है। कभी-कभी वो चाँद से बातें करते-करते छत पर ही सो जाती थी। जब योगिता ज़्यादा गुस्से में होती या बहुत दुखी होती तब वह चाँद से लड़ाई भी करती थी। एक दिन उसने चाँद से कहा, "तुम्हारे कारण ही मुझे मार खाना पड़ता है, तुम बचाने भी नहीं आते हो? और रात को इतनी रोशनी फैलाकर हँसते भी हो।" इतना कहकर वो रोने लगी। चाँद से फिर उसने कहा, "कल तुम कुछ ऐसा करो कि चाचा चाची को डाँटे, फिर मैं मानूँगी कि तुम मेरे अच्छे दोस्त हो।" अगले दिन इत्तेफाक से चाचा ने चाची को किसी बात पर बहुत डाँटा। योगिता आज बहुत खुश थी। वह शाम को इन्तज़ार कर रही थी कि कब चाँद आए और वह अपनी खुशी को चाँद के साथ शेयर करे। रात को चाँद निकला। योगिता ने दुकान से खाने की चीज़ खरीदी। उसने थोड़ी चीज़ खाई और थोड़ी चाँद के लिए छत पर रख दी और बोली, "मुझे आज बहुत अच्छा लगा कि चाचा ने चाची को डाँटा। मुझे रोज़ मारती हैं। इतना काम करती हूँ। पापा भी चाची को कुछ नहीं कहते हैं। आज तुम्हारे कारण यह सब हो पाया है। मेरी रोज़ ऐसी ही मदद करना।"

चुटकुले

चित्र: रिया पटेल

गणितीय मशीन

प्रतिका गुप्ता

पिछले कुछ अंकों से हम पैटर्न देखते आ रहे हैं। तो एक रात मुझे सपना भी इसी से जुड़ा आया। सपने में एक जगह पर बहुत सारी अलग-अलग तरह की मशीनें थीं। इन मशीनों को कोई संख्या देनी थी और ये एक नई संख्या वापस करती थीं। हर मशीन दी गई संख्या के साथ कुछ अलग तरह से काम करती थी। उनमें से कुछ मशीन यहाँ हैं। देखते हैं कि वो क्या करती थीं। जैसे ये मशीन...

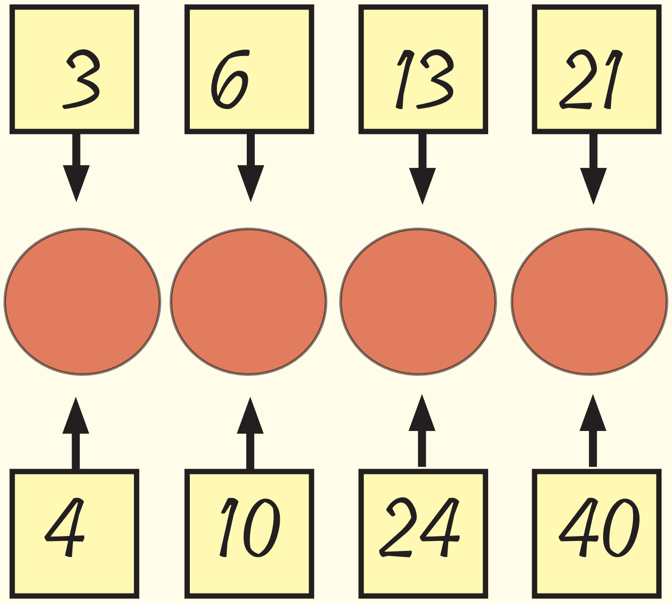

इस मशीन को संख्या देने पर यह दी गई संख्या से एक कम करके उसका दुगुना कर देती है। जैसे 3 देने पर, 3 में से एक कम किया तो मिला 2 और फिर 2 का दुगुना किया तो मिला 4। या 6 देने पर 6 में से एक कम किया तो मिला 5, फिर 5 का दुगुना किया तो मिला 10।

अब एक और मशीन देखते हैं। सोचो कि यह संख्या के साथ क्या कर रही होगी।

यह मशीन दी गई संख्या को पहले दुगुना करती है। फिर जो नई संख्या मिलती है उसमें 2 जोड़कर वापस कर देती है। जैसे 6 को दुगुना किया तो मिला 12 और फिर उसमें 2 जोड़ा तो मिला 14 जो मशीन ने वापस किया।

यह मशीन एक और तरह से संख्या के साथ काम कर सकती है। मशीन दी गई संख्या में पहले 1 जोड़ती है फिर जो नई संख्या मिलती है उसका दुगुना करती है। जैसे 6 में 1 जोड़ा तो मिला 7, और 7 का दुगुना करके 14 वापस कर दिया।

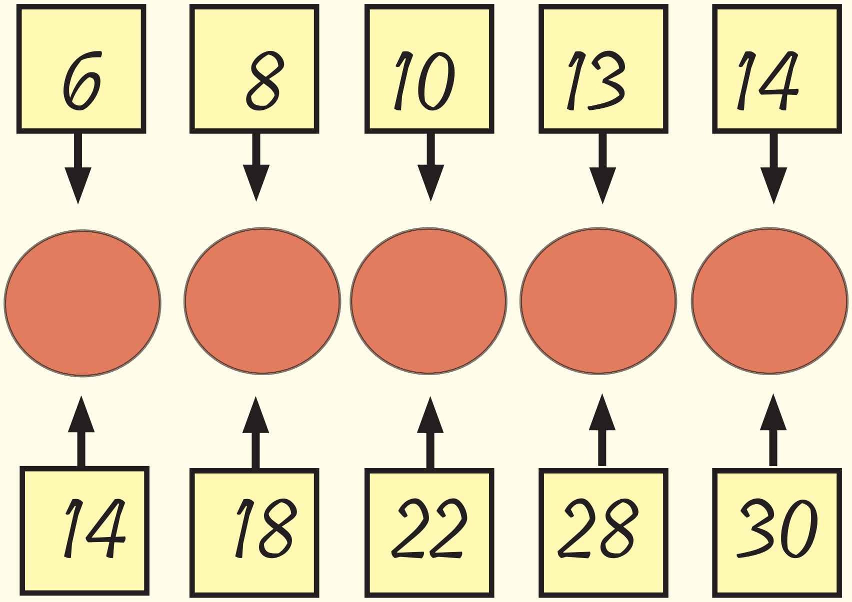

गणित है मज़ेदार!

ऐसी और एक मशीन देखो

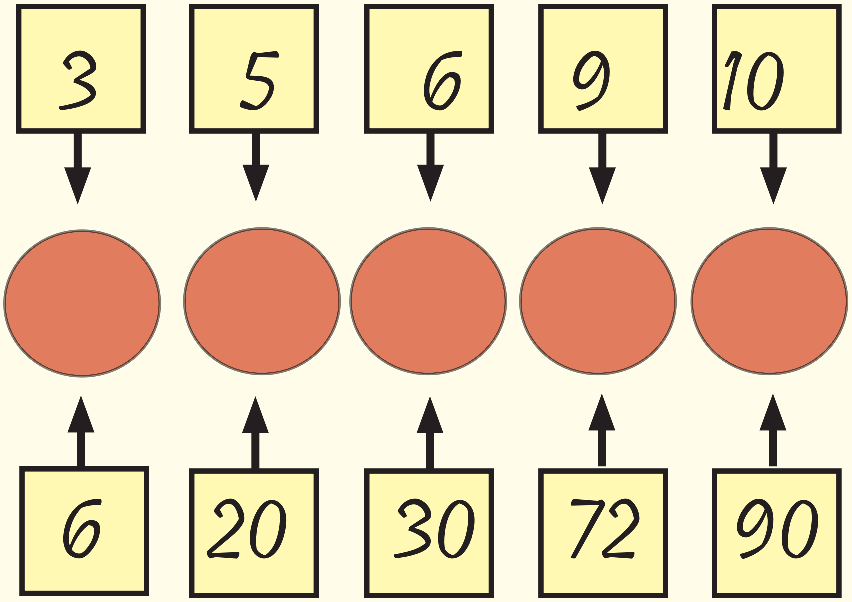

यह मशीन दी गई संख्या का उसी संख्या से गुणा करती है यानी संख्या का वर्ग करती है और फिर जो संख्या मिलती है उसमें से पहले दी गई संख्या को घटा देती है। जैसे 3 दिया तो पहले ये 3 का वर्ग करती है तो हुआ 9। फिर 9 में से 3 घटाकर 6 वापस कर देती है।

वैसे तुम ऐसी मशीन बन सकते हो और अपने दोस्तों को पता करने को कह सकते हो कि तुम क्या कर रहे हो।

चुटकुले

चित्र: रिया पटेल

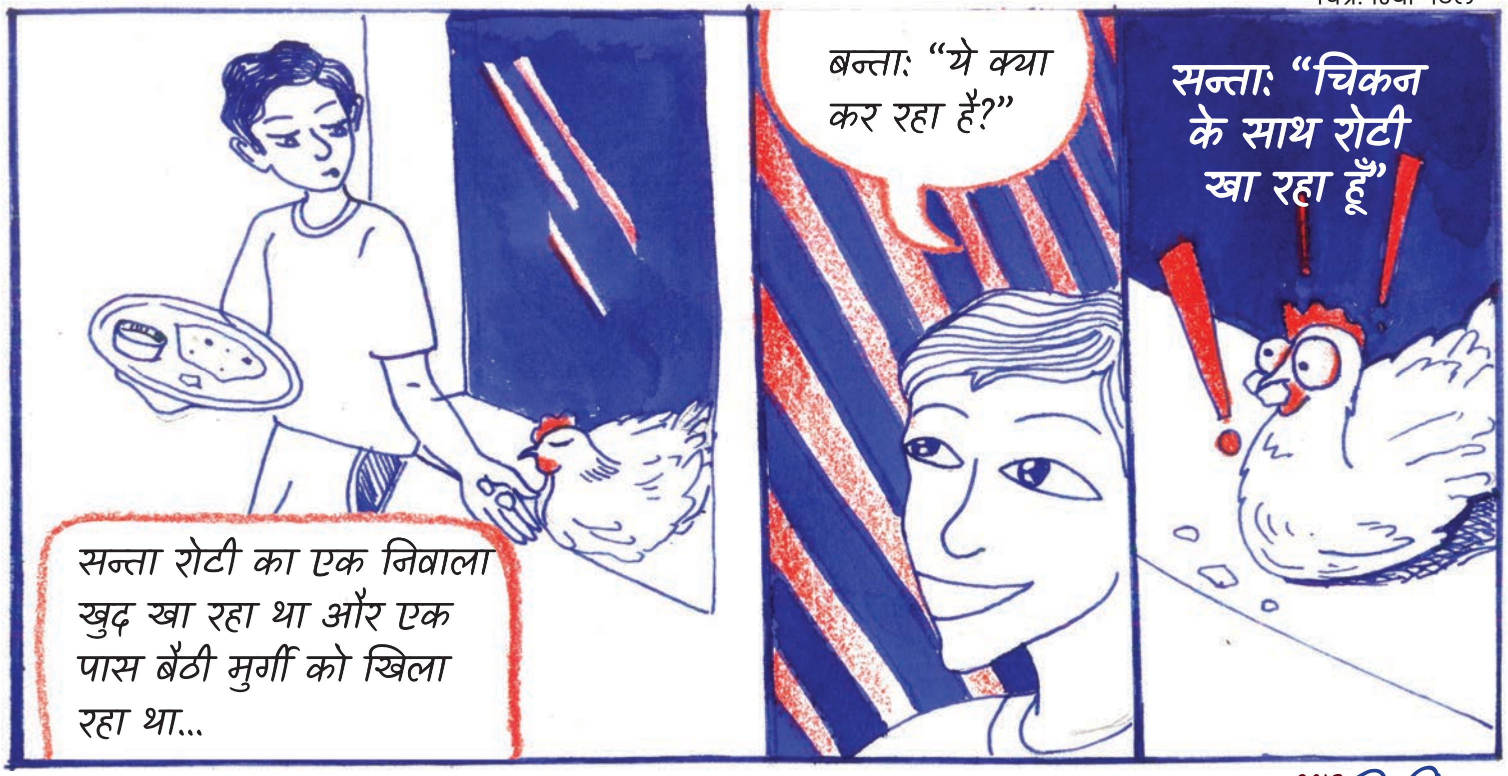

चुनमुन और हिप्पो

ख्वाहिश
चित्र: गरिमा पन्त

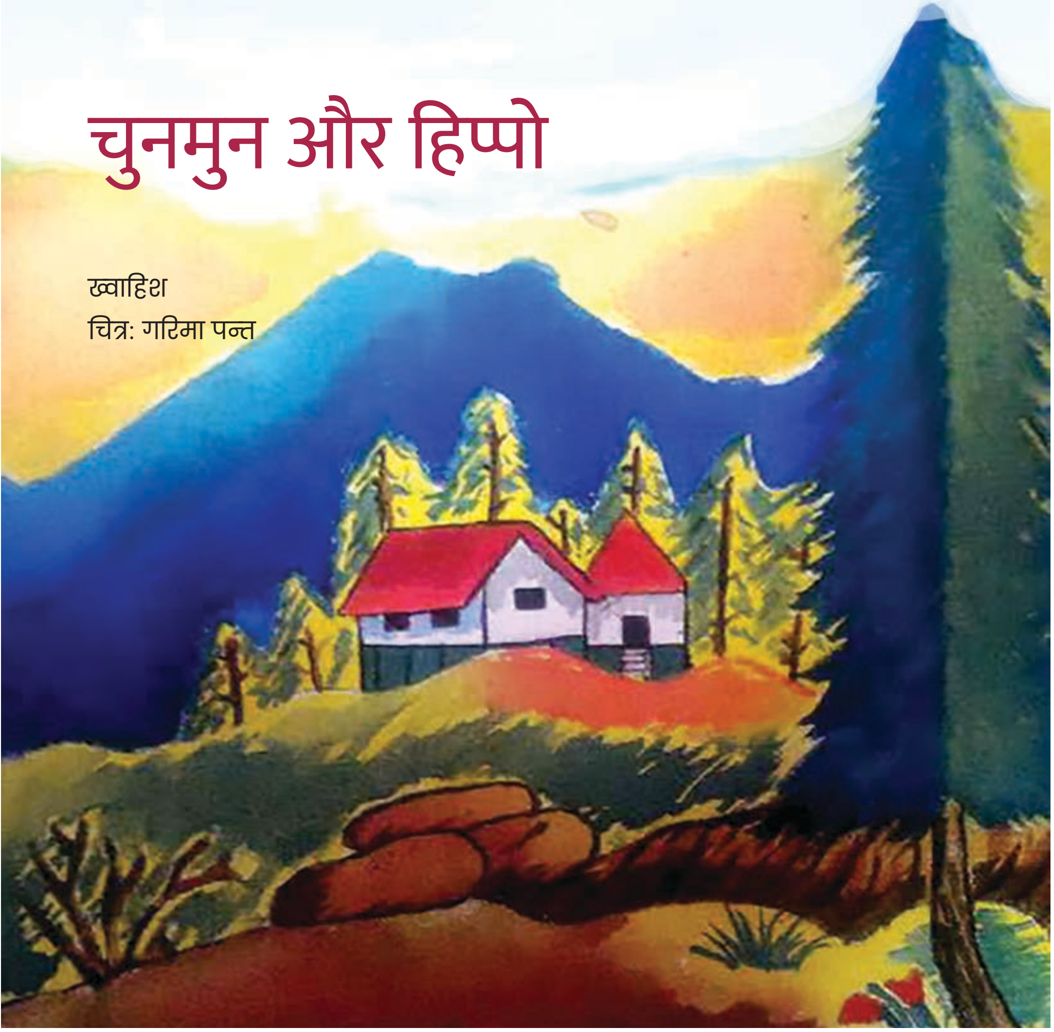

चित्र: गरिमा पन्त, सातवीं, कान्वेंट ऑफ जीजस एण्ड मैरी स्कूल, नई दिल्ली

ये कहानी है एक हिप्पो और चिड़िया की। एक घने जंगल में एक छोटी चिड़िया रहती थी। उस चिड़िया का नाम चुनमुन था। चुनमुन को अभी उड़ना नहीं आता था और वो नीम के पेड़ पर बने अपने घोंसले में रहती थी। उसी जंगल में एक हिप्पो भी रहा करता था जो रोज़ सुबह घूमने निकलता था और रोज़ उस नीम के पेड़ के नीचे से निकलता था। चुनमुन उसी वक्त पेड़ से कूद जाती और हिप्पो की पीठ पर बैठ जाती। जब हिप्पो धमड़-धमड़ चलता था तो चुनमुन को बड़ा मज़ा आता था। चुनमुन को लगता मानो वो कोई झूला झूल रही हो। हिप्पो के बड़े-से शरीर को तो पता भी नहीं चलता कि चुनमुन उसकी पीठ पर इतने मज़े ले रही है। हिप्पो जब नदी के पास जाकर अपनी गर्दन नीचे करके पानी पीता तब चुनमुन सर्रर्रर से सरकते हुए पानी में गिर जाती। वो भी पानी पीकर हिप्पो की नाक पर चढ़ते हुए वापस पीठ पर चढ़ जाती। एक दिन पानी पीते वक्त हिप्पो ने चुनमुन को देख लिया। उसने चुनमुन को उतारकर अपनी बगल में बिठा लिया। पहले तो चुनमुन को थोड़ा डर लगा पर फिर वो दोनों बातें करने लगे। हिप्पो ने चुनमुन से कहा, “इस जंगल में मेरा कोई दोस्त नहीं है, सब मुझे मोटा और भद्दा और बड़ा समझते हैं। मुझसे दूर रहते हैं।” चुनमुन भी बोली, “मुझे भी सब छोटा और कमज़ोर समझते हैं, मैं उड़ भी नहीं पाती। कोई मुझसे बात नहीं करता।” दोनों ने एक-दूसरे से दोस्ती कर ली।

हिप्पो चुनमुन को रोज़ पीठ पर बिठाकर जंगल की सैर कराता। चुनमुन उससे कहती जब उसे उड़ना आ जाएगा वो आसमान के किस्से हिप्पो को सुनाएगी। वो उड़कर कहीं भी जाएगी तो लौटकर हिप्पो की पीठ पर ही आएगी। उनकी दोस्ती पक्की होती जा रही थी।

एक रोज़ हिप्पो ने सोचा इस तरह अगर चुनमुन उसकी पीठ की सवारी करती रहेगी तो उड़ना कैसे सीखेगी। उसने तय किया कि वो चुनमुन को उड़ना सिखाएगा। हिप्पो ने जब चुनमुन को उड़ने को कहा तो वो बहुत डर गई। धीरे-धीरे उसने कोशिश की। शुरू में वो कई बार गिरी, उसे चोट भी लगी लेकिन हिप्पो ने उसे हौसला दिया। एक दिन उसने देखा कि वो उड़ने लगी है। बिना गिरे वो उड़ती गई, उड़ती गई... उसे दूर दिखने वाले आसमान के पास जाना बहुत अच्छा लग रहा था। उसने मुड़कर देखा तो उसका दोस्त हिप्पो दिख नहीं रहा था। वो धरती से बहुत दूर निकल आई थी। इधर हिप्पो चुनमुन के उड़ जाने से बहुत खुश था लेकिन थोड़ा उदास भी था यह सोचकर कि शायद अब उसकी दोस्त उससे दूर चली गई है। तभी हिप्पो को चुनमुन पंख फैलाकर आती हुई दिखी। वो बहुत खुश थी। वो पहले की तरह अपने दोस्त हिप्पो की पीठ पर धम्म-से गिर पड़ी। हिप्पो बहुत खुश हुआ। चुनमुन ने हिप्पो को आसमान के ढेर सारे किस्से सुनाए और हिप्पो उसे पहले की तरह लेकर जंगल की सैर को निकल पड़ा।

ख्वाहिश, दसवीं, देहरादून, उत्तराखण्ड

चॉकलेट बना पैसा!

माया सभ्यता के बारे में तुमने शायद पढ़ा-सुना होगा। यह सभ्यता दस हज़ार साल पुरानी है। मैक्सिको और मध्य अमेरिका में प्राचीन काल में फली-फूली इस सभ्यता का उतार हज़ार साल पहले हुआ लेकिन कुछ माया लोग आज भी इन्हीं इलाकों में मिलते हैं।

काफी समय से हमें पता है कि प्राचीन माया सभ्यता में खरीदी--बिक्री मूलतः वस्तु विनिमय पर आधारित थी। यानी कि पैसों की जगह कुछ खास वस्तुओं का इस्तेमाल होता था जिसमें मक्का और तम्बाकू शामिल थे। न्यूजर्सी, अमेरिका के शोधकर्ता जोआन बैरन के मन में एक बात आई। सोलहवीं सदी के यूरोप में ककाओ बीजों का उपयोग काफी आम था। इनका उपयोग मज़दूरों को भुगतान करने में भी किया जाता था। तो क्या ककाओ बीज का इस तरह से इस्तेमाल माया लोग ने भी किया होगा?

बैरन ने पुराने माया चित्रों पर ध्यान दिया। इनमें बड़ी पेंटिंग्स, सिरेमिक बर्तनों पर बने चित्र और तराशे गए चित्र शामिल थे। ये कलाकृतियाँ आजकल के मैक्सिको तथा मध्य अमेरिका के माया स्थलों से प्राप्त हुई हैं। बैरन ने पाया कि ककाओ बीज कुछ समय के लिए वस्तु विनिमय में इस्तेमाल होता रहा। लेकिन आठवीं सदी के बाद, यानी कि कुछ 1200 साल पहले ऐसा लगता है कि लोग ककाओ बीजों का उपयोग धन के रूप में कर रहे थे। इसी के माध्यम से खरीदी-बिक्री और सेवाओं के बदले भुगतान कर रहे थे। जैसे एक चित्र में बाज़ार में एक महिला गरम-गरम चॉकलेट से भरा प्याला देकर तमाले नामक व्यंजन में इस्तेमाल होने वाला आटा ले रही है।

बहरहाल, बाद के समय में चॉकलेट (सुखाया गया ककाओ बीज) एक मुद्रा के रूप में नज़र आता है। 180 अलग-अलग चित्रों में बैरन ने देखा कि लोगों द्वारा माया हुक्मरानों को चुकाए जा रहे करों या नज़रानों में तम्बाकू और मक्का के अलावा अचानक दो और चीज़ें शामिल हो गईं - बुने हुए कपड़े और ककाओ बीज की थैलियाँ जिन पर लिखा होता था कि उनमें कितने बीज भरे गए हैं। इसी समय राजमहलों में खपत से कहीं ज़्यादा ककाओ और कपड़े इकट्ठे किए जा रहे थे। निश्चित रूप से इनका उपयोग अपने कर्मचारियों को वेतन देने और महल के लिए ज़रूरी सामान खरीदने में किया जाता होगा।

सोचो कैसा रहा होगा - जब हर दिन या हफ्ते पगार के रूप में घरवाले काफी सारी चॉकलेट लाते थे, मगर वे उसे खा नहीं सकते थे,क्योंकि उसका इस्तेमाल तो पैसों की तरह खरीददारी के लिए करना था।

चक मक

स्रोत फीचर्स से साभार

जुगाड़ इन चीज़ों की: फेविकॉल, गुब्बारा, कैंची, धागा (थोड़ा मोटा)

डिस्को बॉल

गुब्बारा फुलाकर गाँठ बाँध दो। अब इसे किनारे रख दो।

एक कटोरे में फेविकॉल और पानी का घोल बना लो। ध्यान रहे कि पानी फेविकॉल से थोड़ी ज़्यादा मात्रा में हो। धागे का रोल लो और धीरे-धीरे धागे को फेविकॉल और पानी के घोल में डुबो दो।

अब गुब्बारे की गाँठ पर गीला धागा बाँध दो। धागे को गुब्बारे के चारों तरफ लपेटते जाओ। गुब्बारे पर पूरी तरह से धागे को लपेटने के बाद उसे सूखने के लिए कम से कम 24 घण्टे के लिए टाँग दो।

सूख जाने पर पेंसिल से हल्का दबाव डालकर गुब्बारे को अन्दर की ओर करो जिससे वह धागे से अलग हो जाए।

गुब्बारा जब धागे से पूरी तरह जुदा हो जाता है तो उसे पिन से फोड़कर निकाल दो।

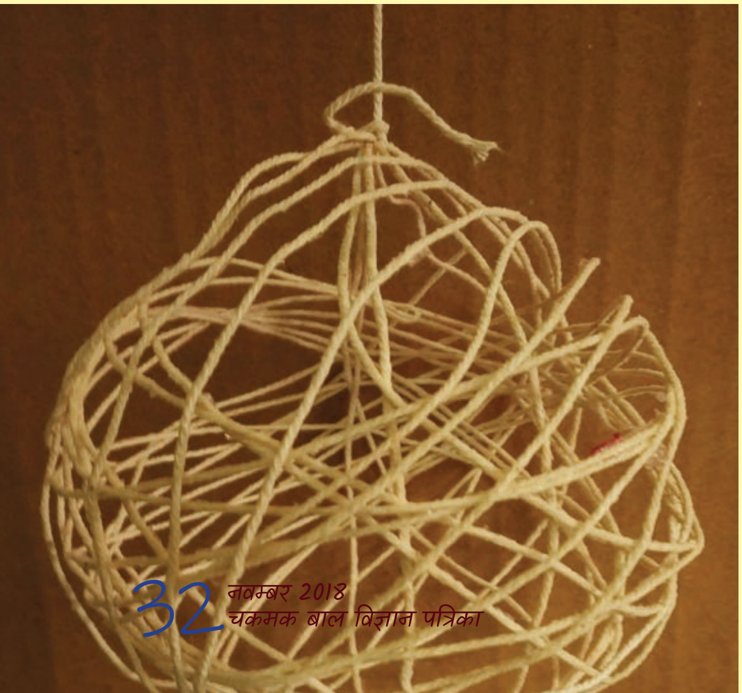

अगर तुम्हारे धागे का आकार बिगड़ गया हो तो उखड़े हुए आकार के अन्दर गुब्बारे को घुसाकर फुला दो। वो फिर से गोल आकार का हो जाएगा। फेविकॉल और पानी का घोल दोबारा बनाओ और उसे हल्के से सूखे हुए गोले पर लगाओ। इतना न लगाना कि धागा गीला हो जाए और आकार बिगड़ जाए।

अब गोले पर अलग-अलग रंगों के चमकीले पाउडर छिड़क दो। गोले के अन्दर एक बल्ब भी लगा सकते हो। हो गया तैयार तुम्हारा डिस्को बॉल।

चित्र: प्रिशा गुप्ता
सातवीं, सन सिटी स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

गिलहरी

मुकुल वावल
चित्र: सुहानी श्रीवास्तव

अरे गिलहरी सुन-सुन-सुन
दाना खाजा चुन-चुन-चुन
रेशम जैसी पूँछ तुम्हारी
अच्छी लगती काली धारी
कूद-कूदकर चलती है
कितनी प्यारी लगती है

मुकुल वावल, ग्राम मंगल संस्था, पुणे महाराष्ट्र
सुहानी श्रीवास्तव, पाँचवीं, डीपीएस वाराणसी, उत्तर प्रदेश

चाँद का तोहफा

रोहित

हम सब मेला देखने गए। पापा ने चिंटू के लिए खूबसूरत चश्मा खरीदा। मेरे लिए एक चमकती नीली टोपी खरीदी। घर जाते समय ज़ोर की हवा चली। हवा मेरी टोपी उड़ा ले गई। टोपी पीपल की डाल पर लटक गई। मैं खूब रोया। मैंने रात में खाना भी नहीं खाया। देर रात में चाँद निकला। उसने मेरी टोपी पहन रखी थी। वह खुशी से मुस्कराया। मैं भी मुस्कराया। अगले दिन माँ ने मुझे एक नई लाल टोपी दी। उस रात चाँद और मैंने अपनी-अपनी टोपियाँ पहनीं और मुस्कराए। हम खुश थे। आपका क्या ख्याल है क्या सूरज को भी टोपी की ज़रूरत है?

रोहित, दीपालया संस्था, ओखला, दिल्ली

मैं रोज़ सोचती हूँ

तान्या नेताम

मैं रोज़ सोचती हूँ कि मैं रोज़ पढ़ाई करूँगी। जब मैं क्लास के अन्दर आती हूँ तो दिमाग में अन्दर यही-यही बात घूमती रहती है। लेकिन भुलाने पर भी नहीं भूलती। फिर भी मैं कोशिश करती हूँ कि मैं अच्छे-से रोज़ आकर पढ़ाई करूँ ताकि परिवार वाले खुश रह पाएँ। और कहीं पर भी जाने की आज़ादी दे पाएँ लेकिन नाना-नानी मुझे कहीं भी जाने नहीं देते और पापा भी हमारे परिवार में बहुत कम लड़कियों को पढ़ने दे रहे हैं। मेरे नाना-नानी को लगता है कि लड़कियाँ पढ़-लिखकर बिगड़ जाती हैं। लेकिन मैं उन्हें बताना चाहती हूँ कि लड़कियाँ पढ़ने से नहीं बिगड़ती बल्कि और समझदार हो जाती हैं। अपना निर्णय खुद ले सकती हैं। परिवार वाले लड़कों को ही क्यूँ ज़्यादा पढ़ने देते हैं लड़कियों को क्यों नहीं? लेकिन लड़कियों को भी पढ़ाना चाहिए। लड़कियों को भी घूमने की आज़ादी मिलनी चाहिए। दोनों को बराबर का सम्मान मिलना चाहिए ताकि लड़कियाँ हमेशा पीछे ना रहें।

तान्या नेताम, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

चित्र: हर्षिता, 10 साल, पूर्णा लर्निंग सेंटर, बेंगलूरु, कर्नाटक

मैं आम हूँ

दीपा

मैं आम का पेड़ हूँ
घर के पीछे रहता हूँ
मुझ पर आम आते हैं
बच्चे लूटकर खाते हैं
ज़्यादा खानेवालों के
दाँत खट्टे करता हूँ
मैं आम का पेड़ हूँ

दीपा, सात वर्ष, ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, सवाई माधोपुर, राजस्थान

पेड़

नेहा राय

हरे-भरे ये पेड़ बड़े
हरदम रहते ये खड़े
बारिश में ये खूब नहाते
डाली-डाली फूल खिलाते
तेज़ धूप से हमें बचाते
छाया में हम इनकी सुस्ताते
मीठे फल यह हमें खिलाते
परोपकार का पाठ सिखाते

नेहा राय, चौथी, हिमालयन प्रोग्रसिव स्कूल किच्छा
उधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

चित्र: अर्शी, 9 साल, लक्ष्यम संस्था, नई दिल्ली

LEARNING *for* LIFE

Azim Premji University

3-year B.A. (Economics or Humanities)

3-year B.Sc. (Physics, Biology or Mathematics)

Also study Interdisciplinary areas like Development, Education, Sustainability, Media, etc.

Option to pursue an Honours degree

4-year B.Sc.B.Ed. Dual-Degree in Science and Education

Science (Choose from Physics, Biology or Mathematics)

Education (Build perspectives in Education and skills to teach effectively through courses in Curriculum and Pedagogy)

Benefit from early admissions

APPLY NOW

Admissions Office, Azim Premji University, Electronics City, Bengaluru - 560 100.

Toll free helpline: 1800 843 2001 | Email: ugadmissions@apu.edu.in | Web: azimpremjiuniversity.edu.in/ug

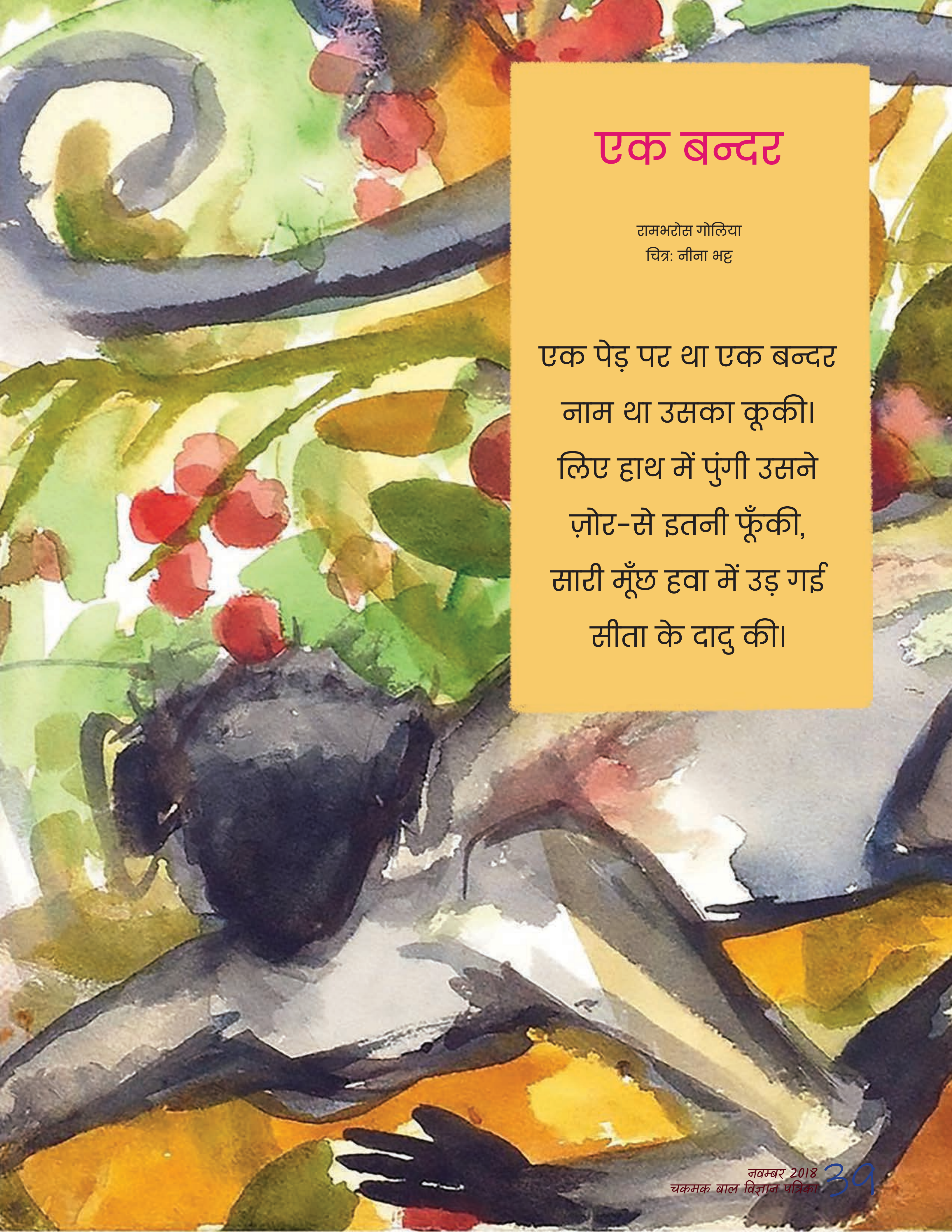

एक बन्दर

रामभरोस गोलिया
चित्र: नीना भट्ट

एक पेड़ पर था एक बन्दर
नाम था उसका कूकी।
लिए हाथ में पुंगी उसने
ज़ोर-से इतनी फूँकी,
सारी मूँछ हवा में उड़ गई
सीता के दादु की।

माथापच्ची

1. शर्ली के पास 1 इंच के 20 मोती हैं। एक चौकोर फोटोफ्रेम बनाने के लिए वो इन सारे मोतियों का इस्तेमाल करना चाहती है। क्या तुम उसकी कुछ मदद कर सकते हो?

2. एक पति-पत्नी घूमने के लिए हिल स्टेशन गए। दो दिन बाद पति अकेला वापिस आया और उसने पुलिस को बताया कि उसकी पत्नी पहाड़ से गिरकर मर गई। अगले दिन पुलिस ने उस व्यक्ति को अपनी पत्नी के कत्ल में गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया और पुलिस से पूछा के आपको कैसे पता चला कि कातिल मैं हूँ। पुलिस ने बस इतना कहा कि हमने तुम्हारे ट्रेवल ऐजेंट से पूछताछ की और हमें पता चल गया कि कातिल कौन है। ट्रेवल ऐजेंट ने ऐसी क्या बात कही होगी कि पुलिस को कातिल का पता चल गया?

3. टेबल टेनिस की एक गेंद एक गहरे कड़क पाइप में गिर गई है। पाइप का मुँह गेंद से थोड़ा ही बड़ा है, इसलिए तुम अपना हाथ डालकर गेंद को नहीं निकाल सकते। पाइप को नुकसान पहुँचाए बिना गेंद को निकालने का कोई तरीका हो सकता है क्या?

4. कौन-सी चीज़ है जो खरीदने पर काली, इस्तेमाल करने पर लाल और फेंकने पर सफेद रंग की होती है?

5. वह क्या है जिसे ज़िन्दा रहने पर गाड़ा जाता है और मर जाने पर खोदकर निकाल दिया जाता है?

6. ऐसा क्या है जिसे बिना पकड़े, बिना छुए रोका जा सकता है?

फटाफट बताओ कि

राजा-रानी कहें कहानी
एक घड़े में दो रंग पानी

(अण्डा)

काला कलूटा मेरा रूप, अच्छी लगती कभी न धूप
दिन ढलने पर मैं आ जाता, सारे जग में हूँ छा जाता

(अँधेरा)

राजा के राज्य में नहीं, माली के बाग़ में नहीं
फोड़ो तो गुठली भी नहीं, खाओ तो स्वाद नहीं

(ओला)

एक तमाशा देखा जात
नाच उलट के घोड़ा खात

(तवा)

छतरी

निकोलाई रादलोव

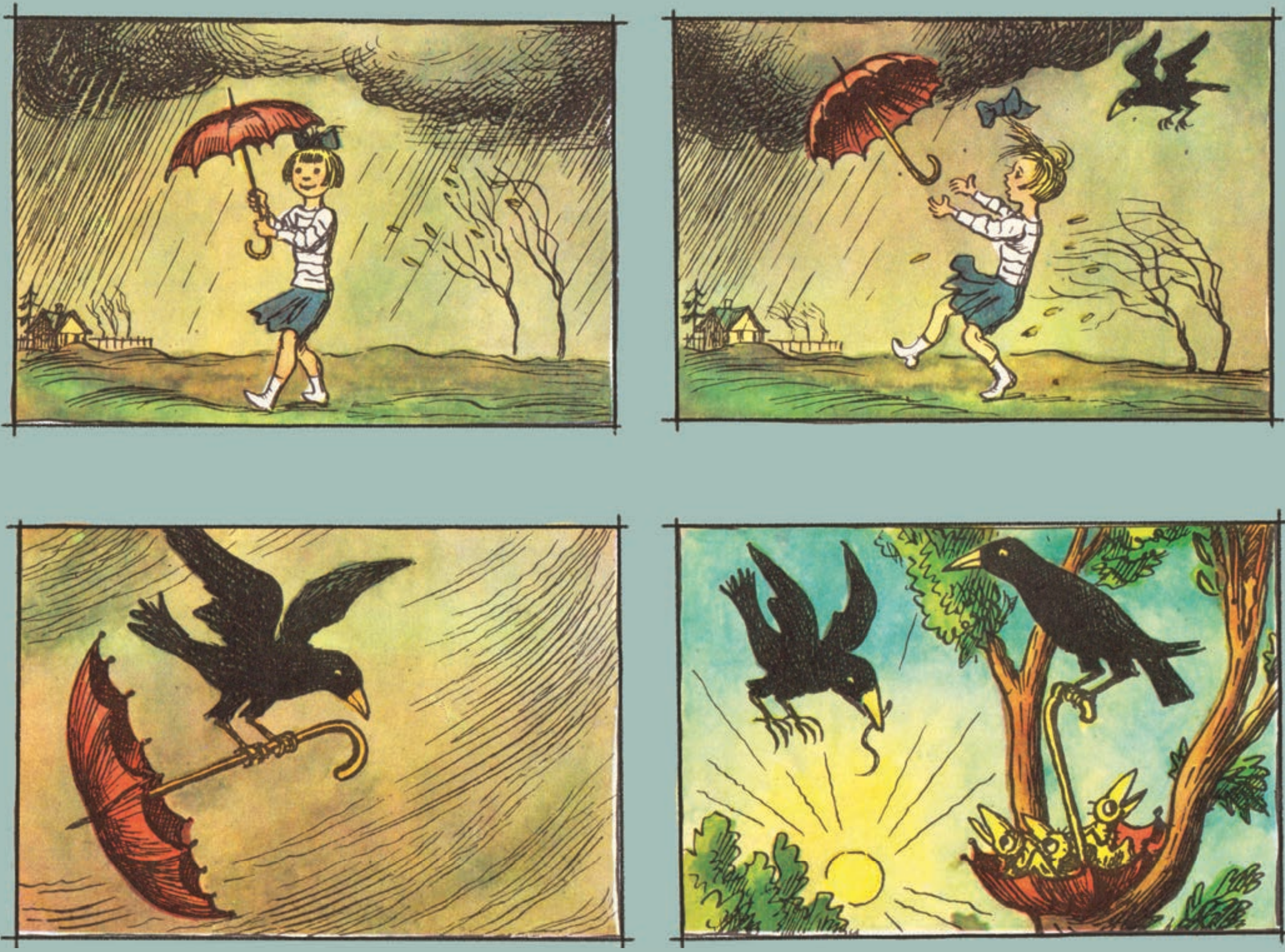

सुडोकू-13

	5		2				6
	4				2	5	
		3	5				8
4				1		2	
5		1		6			
			6			8	4
	6	4			3		
			1		4		7

दिए हुए बॉक्स में 1 से 8 तक के अंक भरना। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय हमें यह ध्यान रखना है कि 1 से 8 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, बॉक्स में तुमको आठ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि उन डब्बों में भी 1 से 8 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

माथापच्ची जवाब

1. पहली नज़र में देखने पर लगता है कि यह एक आसान-सा सवाल है। चूँकि चौकोर में 4 भुजाएँ होती हैं तो यदि हम 4 से 20 को भाग दे दें तो हम 5-5 मोती लगाकर आसानी से फ्रेम बना सकते हैं। करके देखो। तुम पाओगे कि ऐसा करने पर तुम केवल 16 मोती ही इस्तेमाल कर रहे हो जबकि पूरे 20 मोती इस्तेमाल करने हैं। पूरे 20 मोती इस्तेमाल करके इस तरह फ्रेम बना सकते हैं:

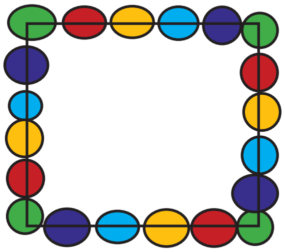

2. ट्रेवल ऐजेंट ने पुलिस का बताया कि उस व्यक्ति ने वापिसी की केवल एक टिकट बुक कराई थी।

3. पाइप में थोड़ा पानी डाल दो तो गेंद पानी के ऊपर तैरने लगेगी।

4. कोयला

5. पौधा

6. अपनी साँस

सुडोकू-12 का जवाब

2	4	6	7	1	8	3	5
5	8	3	1	6	2	7	4
1	2	4	3	7	5	6	8
8	7	5	6	2	4	1	3
3	6	8	2	4	1	5	7
7	5	1	4	3	6	8	2
6	3	2	8	5	7	4	1
4	1	7	5	8	3	2	6

भूलभुलैया का जवाब

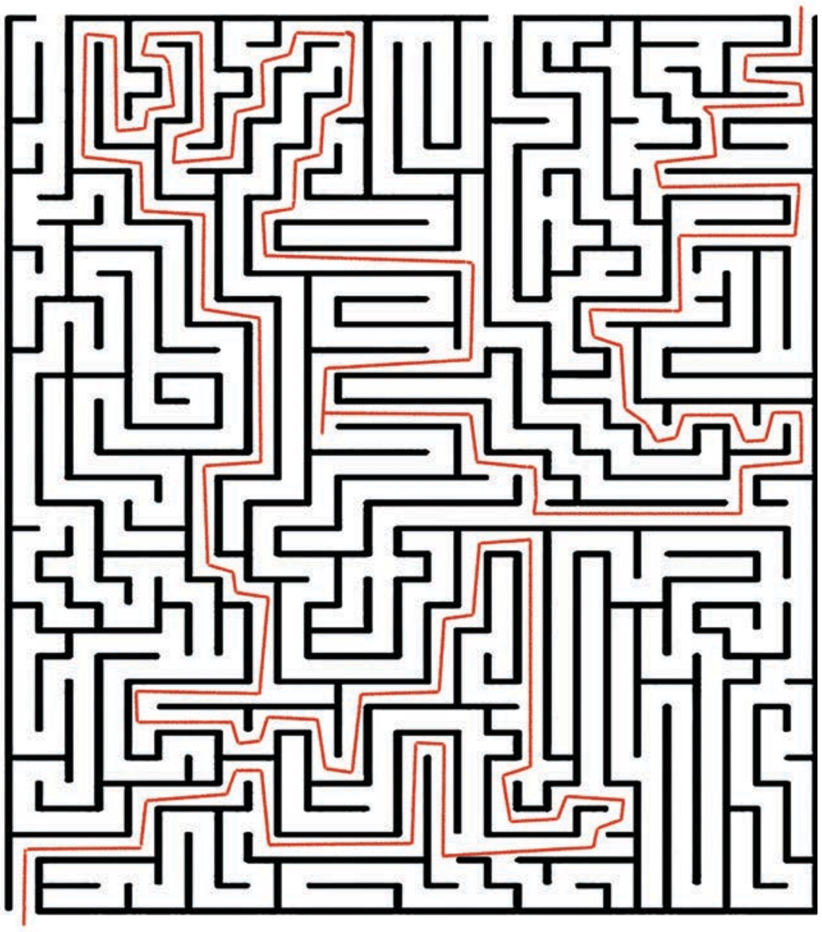

अक्टूबर की चित्र पहेली का जवाब

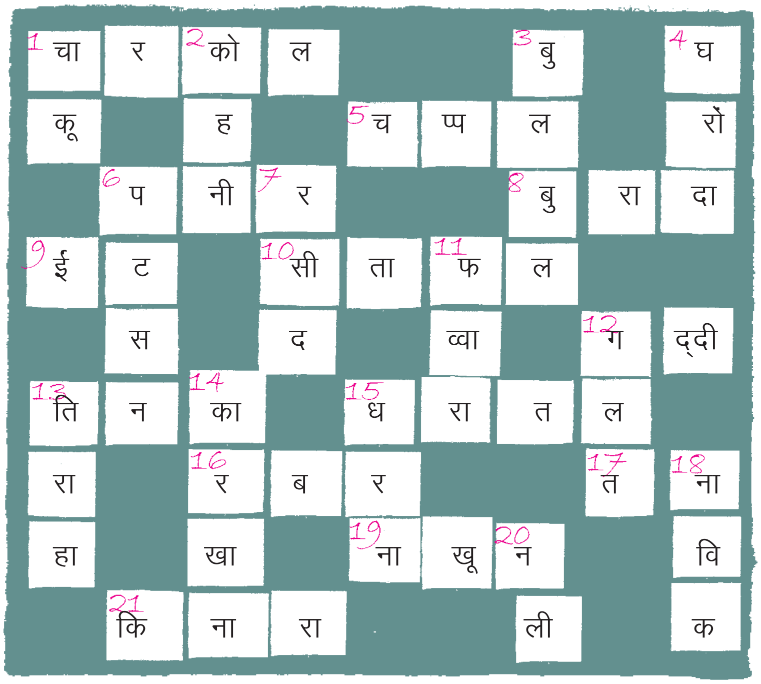

चित्रपहेली: अनुष्का, राधिका, रोहित और ज्ञानेन्द्र, छठी, के के अकैडमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
डिज़ाइन: दिलीप चिंचालकर

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2018-20

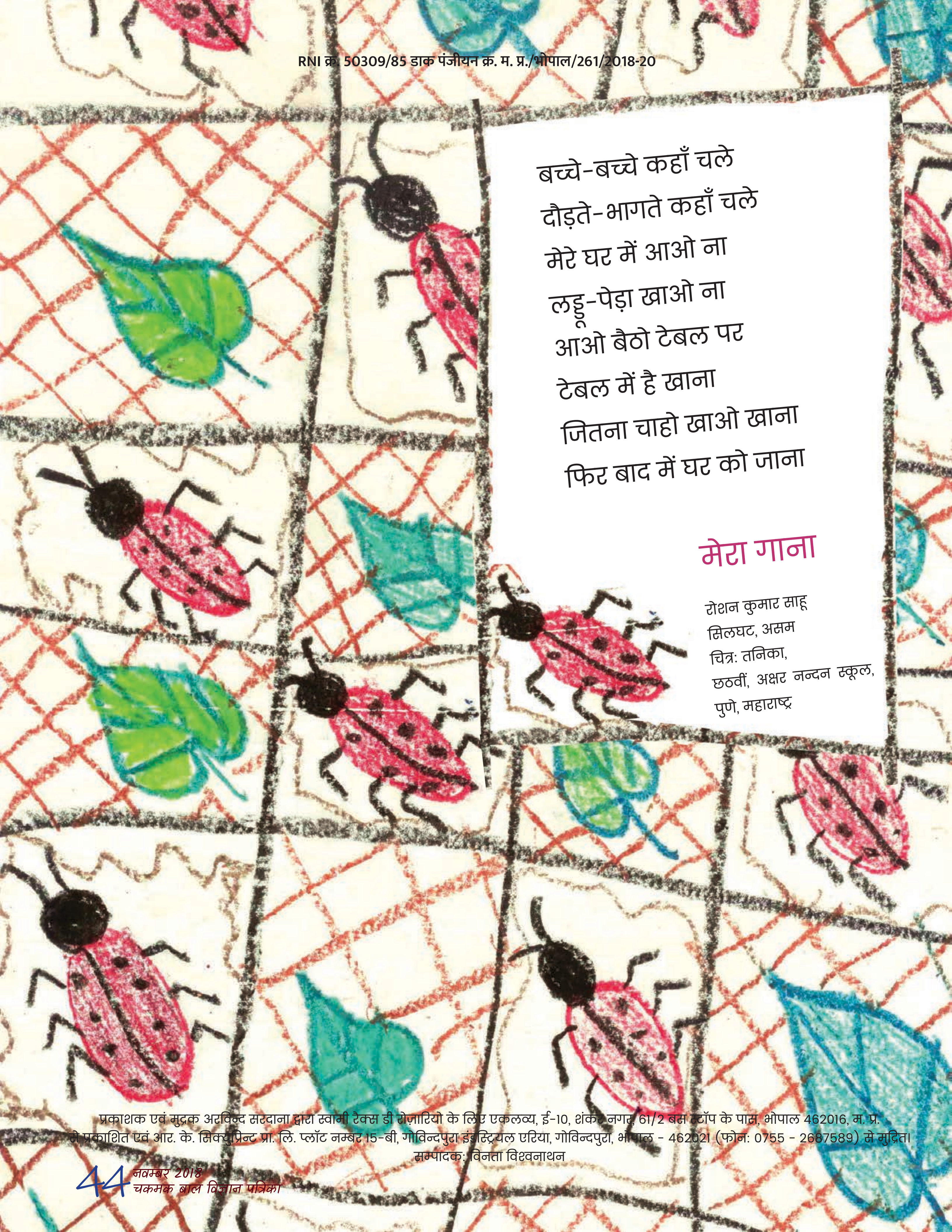

बच्चे-बच्चे कहाँ चले
दौड़ते-भागते कहाँ चले
मेरे घर में आओ ना
लड्डू-पेड़ा खाओ ना
आओ बैठो टेबल पर
टेबल में है खाना
जितना चाहो खाओ खाना
फिर बाद में घर को जाना

मेरा गाना

रोशन कुमार साहू
सिलघट, असम

चित्र: तनिका,
छठवीं, अक्षर नन्दन स्कूल,
पुणे, महाराष्ट्र

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म. प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन